अक्षय्यम्

जनवरी – मार्च 2020

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिन्दी पत्रिका

प्रमुख गतिविधियां

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी द्वारा 'अक्षय्यम्' का विमोचन

दिनांक 11 फरवरी, 2020 को बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री संजीव चड्ढा की अध्यक्षता में प्रधान कार्यालय स्थित विभागों के साथ एक बैठक की गई. इस बैठक में बैंक के महाप्रबंधक (मुख्य समन्वयन) द्वय श्री बी आर पटेल, श्री रोहित पटेल सहित सभी विभाग प्रमुख उपस्थित रहे. इस अवसर पर प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने बैंक की तिमाही हिन्दी पत्रिका 'अक्षय्यम्' के दिसंबर, 2019 अंक का विमोचन किया.

संसदीय राजभाषा समिति का पुरी में निरीक्षण दौरा

दिनांक 19 फरवरी 2020 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति के द्वारा पुरी शाखा का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया. इस निरीक्षण बैठक की अध्यक्षता माननीय राज्य सभा सांसद श्री वशिष्ठ नारायण सिंह ने की. इस अवसर पर माननीय सांसद, समिति सचिवालय के पदाधिकारीगण सहित पटना अंचल के अंचल प्रमुख श्री नित्यानंद बेहेरा, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा से प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री रोशन शर्मा, भुवनेश्वर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री सोमनाथ नंद, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा से सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र तथा पुरी शाखा के शाखा प्रमुख श्री मनोज कुमार मिश्रा भी उपस्थित रहे.

कार्यपालक निदेशक द्वारा 'सह्याद्रि' पत्रिका का विमोचन

दिनांक 06 फरवरी 2020 को पुणे अंचल के दौरे पर आए कार्यपालक निदेशक श्री विक्रमादित्य सिंह खीची द्वारा अंचल की पत्रिका 'सह्याद्रि' के अक्तूबर – दिसंबर – 2019 अंक का विमोचन किया गया. इस अवसर पर महाप्रबंधक (मुख्य समन्वयन) श्री नवतेज सिंह, अंचल प्रमुख श्री के. के. चौधरी, उप-अंचल प्रमुख श्री हरीश चन्द एवं पुणे अंचल के सभी क्षेत्रों के क्षेत्रीय प्रमुख तथा उप-क्षेत्रीय प्रमुख भी उपस्थित रहे.

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की तिमाही हिन्दी पत्रिका

वर्ष – 17 ❊ अंक – 61 ❊ जनवरी – मार्च 2020

कार्यकारी सम्पादक

के. आर. कनोजिया

महाप्रबंधक (परिचालन एवं सेवाएं तथा
प्रभारी–राजभाषा एवं संसदीय समिति)

सम्पादक

पारुल मशर

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहायक सम्पादक

अम्ब्रेश रंजन कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

सर्वेश तिवारी

प्रबंधक (राजभाषा)

–:– संपर्क :–

राजभाषा विभाग

बड़ौदा भवन, बैंक ऑफ़ बड़ौदा
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड
अलकापुरी, बड़ौदा – 390007
फोन : 0265–2316580
ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com
bobakshyayyam@gmail.com

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के लिए **पारुल मशर,**
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा बड़ौदा भवन,
बैंक ऑफ़ बड़ौदा, पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड,
अलकापुरी, बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित.

रुपांकन एवं मुद्रण

जयंत प्रिन्टरी एलएलपी, मुंबई
प्रकाशन तिथि : 31–05–2020

अनुक्रमणिका

इस अंक में

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश 04

कार्यपालक निदेशकों की डेस्क से 05

कार्यकारी संपादक का संदेश / अपनी बात 07

श्री अरुण गोविल का साक्षात्कार 08

कोरोना का विश्व की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव 11

समय से ऋण वसूली के लाभ 14

नवजागरण की भूमि.... पश्चिम बंगाल 18

बैंकिंग में डिजिटल परिवर्तन – चैटबॉटस् का युग 21

सैंडविच जेनरेशन 25

आइये! सीखें भारतीय भाषाएँ 26–27

अपनी जड़ से जुड़े रहने की सीख देती 'कुर्सी' 33

आसन और स्वास्थ्य 39

बैंकिंग शब्द मंजूषा 47

अपने ज्ञान को परखिए 48

पुस्तक समीक्षा 49

चित्र बोलता है 50

अक्षय्यम्, बैंक ऑफ़ बड़ौदा की सभी शाखाओं/कार्यालयों में नि:शुल्क वितरण के लिये प्रकाशित की जाती है. इसमें व्यक्त विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं.

''देश की अर्थव्यवस्था और लोगों के जीवनयापन में महत्वपूर्ण भूमिका होने के नाते बैंकों को अत्यंत जरूरी सेवाओं की श्रेणी में रखा गया है. इसी अहम् जिम्मेदारी के कारण हम सभी बड़ौदियन के लिए यह जरूरी है कि विपरीत परिस्थितियों में भी हम अपनी सेवाओं को जारी रखें. मैं इस बात को महसूस कर रहा हूं कि आप सभी अपने-अपने स्तरों पर देशवासियों को निर्बाध बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करवा रहे हैं तथा समाज और देशहित में ऐतिहासिक कार्य कर रहे हैं.''

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

बैंक की तिमाही हिन्दी पत्रिका 'अक्षय्यम्' के नवीनतम अंक के माध्यम से एक बार पुनः आपसे जुड़ना मुझे प्रसन्नता का अनुभव दे रहा है. आज हम सभी एक अभूतपूर्व दौर का सामना कर रहे हैं. कोरोना के प्रकोप के कारण दुनिया भर में आर्थिक और सामाजिक उथल-पुथल के इस समय में हम एक संवेदनशील मोड़ पर खड़े हैं. देश की अर्थव्यवस्था और लोगों के जीवनयापन में महत्वपूर्ण भूमिका होने के नाते बैंकों को अत्यंत जरूरी सेवाओं की श्रेणी में रखा गया है. इसी अहम् जिम्मेदारी के कारण हम सभी बड़ौदियन के लिए यह जरूरी है कि विपरीत परिस्थितियों में भी हम अपनी सेवाओं को जारी रखें. मैं इस बात को महसूस कर रहा हूं कि आप सभी अपने-अपने स्तरों पर देशवासियों को निर्बाध बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करवा रहे हैं तथा समाज और देशहित में ऐतिहासिक कार्य कर रहे हैं. यह कहना गलत नहीं होगा कि आज की परिस्थितियां हमारे लिए भी अनुकूल नहीं हैं, पर ऐसे दौर में किए गए हमारे साहसिक कार्य को लंबे समय तक याद रखा जाएगा.

हमने इस संवेदनशील दौर में नए वित्तीय वर्ष में कदम रखा है. देश की वर्तमान परिस्थितियों में बेहतर और सुरक्षित ग्राहक सेवा के जरिए ग्राहक-केंद्रित बैंक के रूप में हमारी पहचान और भी सुदृढ़ होगी. कोरोना के प्रभाव को देखते हुए भारत सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक ने भी राष्ट्रहित में कई उपयोगी कदम उठाए हैं. तदनुसार, हमारे बैंक ने भी सभी प्रकार के उधारकर्ताओं के लिए तीन महीने तक के ऋण-स्थगन की व्यवस्था की है. इसके अलावा हम अपने ग्राहकों को लगातार डिजिटल लेनदेन के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं और रिटेल ग्राहकों को तीन माह तक डिजिटल लेनदेन पर लगने वाले प्रभारों में छूट, एमएसएमई तथा कॉर्पोरेट उधारकर्ताओं के लिए बड़ौदा कोविड इमरजेंसी क्रेडिट लाइन जैसी सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं. इसके अलावा केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न राहत कार्यों के अंतर्गत ग्राहकों के खातों में सरकार द्वारा जमा की जाने वाली धनराशियों को समय से ग्राहकों को प्रदान करने में भी बैंककर्मी ही प्रमुख जिम्मेदारी निभा रहे हैं. इन सभी दायित्वों के निर्वहन में आप सभी की विलक्षण प्रतिभाएं निश्चित रूप से मानव कल्याण की दिशा में बहुत उपयोगी साबित हो रही हैं और इसी वजह से हम अपना कार्य सामान्य रूप से आगे बढ़ा पाए हैं.

इन सब के बीच मौजूदा संकट से बाहर निकलने का लगातार प्रयास चल रहा है. पहले भी विश्व में आए संकटों पर हमारी जीत को देखते हुए मन में यह सकारात्मक विश्वास जरूर आता है कि निश्चित रूप से सामूहिक प्रयासों से हम इसका उपाय तलाश पाएंगे. मनुष्य अपनी यात्रा जारी रखेगा. इन सभी जोखिमों के बीच हमें देश, समाज और संस्कृति को आगे लेकर जाना है और नई पीढ़ी को इसका वाहक बनाना है. वर्तमान परिस्थिति ने मानव समाज को एकजुट होने का संकेत दिया है. हमें इस संदेश को समझना चाहिए और समाज की बेहतरी में अपने-अपने स्तर से सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए.

भविष्य की चुनौतियों पर जीत की उम्मीद के साथ मैं आप सभी के साहसिक कार्यों की सराहना करता हूं.

शुभकामनाओं सहित,

संजीव चड्ढा

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से...

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी पत्रिका 'अक्षय्यम्' के इस नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे संवाद करने का अवसर पाकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है. यह पत्रिका परस्पर संवाद के साथ-साथ बैंक में आयोजित राजभाषा की गतिविधियों एवं स्टाफ सदस्यों की रचनाधर्मिता को प्रस्तुत करने का एक उत्तम माध्यम है.

आज पूरा विश्व एक ऐसी वैश्विक महामारी कोरोना वायरस 'कोविड-19' के प्रकोप से जूझ रहा है जिससे हमारे समाज में कई तरह की अड़चनें उत्पन्न हो गई हैं. कोविड-19 ने आर्थिक एवं व्यावसायिक जगत की रूपरेखा ही बदल डाली है और इस बदली हुई परिस्थिति ने हमारी कार्य-पद्धति पर भी प्रभाव डाला है. इस तरह बदली हुई कार्य-पद्धति से बैंकिंग जगत भी अछूता नहीं है. इस वैश्विक संकट के दौर में सभी बैंकों द्वारा अपने उत्पादों के साथ-साथ कार्यप्रणालियों में भी निरंतर एक नया बदलाव किया जा रहा है. ऐसे में हमें भी नवोन्मेषी कार्य-संस्कृति के साथ उत्साह से कार्य करने की आवश्यकता है.

प्रत्येक चुनौती अपने साथ अवसर भी लाती है. चुनौतियां हमारी क्षमताओं को बढ़ाती हैं. हमारे धैर्य की कसौटी करती हैं, हममें जोश, उत्साह एवं आत्म-विश्वास का संचार करती हैं. कोविड-19 भी अपवाद नहीं है. इस संकट की घड़ी में जब कि देश में लॉकडाउन चल रहा है, ऐसे में सरकार द्वारा देश के जन-सामान्य के लिए उपलब्ध कराई जा रही आर्थिक मदद को उन तक पहुंचाने की ज़िम्मेदारी निभाने के दौरान स्वयं को एवं शाखा में आने वाले ग्राहकों को कोविड-19 से सुरक्षित रखना, लॉकडाउन के अहम नियम 'सामाजिक दूरी' का अनुपालन करना आदि निश्चित ही एक बहुत बड़ी चुनौती है जिसका आप सभी ने बड़ी ही सूझ-बुझ और धैर्य के साथ सामना किया है. इसका स्पष्ट प्रभाव हमें सोशल मीडिया पर देखने को मिल रहा है.

मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाला समय हमारे लिए प्रकाशमान होगा. इस नए कल का स्वागत हम दूसरों का अनुसरण करने के बजाए नए उत्साह और नई पहलों से करेंगे. हमारी इस नई यात्रा की शुरूआत हमें आपसी सद्भाव, समन्वय और उत्कर्ष के साथ करनी है, ताकि हमारी यह नई यात्रा अत्यंत सफल एवं सुखद हो.

शुभकामनाओं सहित,

मुरली रामास्वामी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से...

प्रिय साथियो,

'अक्षय्यम्' के इस नए अंक के माध्यम से आप सभी के समक्ष अपनी बात रखना मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है. पूरा विश्व अभी जिन विकट परिस्थितियों का साक्षी है यह शायद 'न भूतो न भविष्यति' वाली स्थिति है. इन परिस्थितियों के बीच पूरे विश्व में भारत एक विश्व नायक के रूप में उभरा है.

इस समय के दौरान मैंने अनुभव किया कि हम जिन चीजों के बिना रहने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे, आज उन चीजों के अभाव में जीवन बड़े ही आराम से चल रहा है. इस बुरे वक्त में हम सभी ने एक बात महसूस की होगी कि अधिकांश लोग कार्यालयीन दायित्वों के बाद पारिवारिक दृष्टि से ज्यादा बेहतर तरीके से अपना जीवन बिता पा रहे हैं. परिवार के साथ अच्छे सुकून के पल बिताने, अपनी पसंदीदा किताबों को पढ़ने, अपने शौक को विकसित करने का हमें समय मिल रहा है. प्रकृति भी शुद्ध होकर अपने बड़े ही सुंदर और सौम्य रूप में खिल रही है. इस वक्त ने हमें सिखाया है कि जरूरत के सीमित साधनों के साथ भी एक अच्छे जीवन को जिया जा सकता है.

इस प्रतिकूल समय में हम बैंकर जिस तरह से अपनी सेवाएं देकर जरूरतमंदों की सहायता कर रहे हैं उसकी सराहना विभिन्न मंचों से की जा रही है. सरकार द्वारा गरीबों के लिए जिस आर्थिक मदद की घोषणा की गई है, वह आप सभी के सहयोग के बिना संभव नहीं हो पाती. फ्रंटलाइन पर कार्य करनेवाली हमारी शाखाएं इस महामारी के प्रकोप के बीच देश के गरीब वर्ग के लिए एक बड़ी राहत हैं. आपसी सहयोग एवं दृढ़ मनोयोग के बिना इन विकट परिस्थितियों पर विजय नहीं पाई जा सकती. इन परिस्थितियों में बैंक अपने स्टाफ सदस्यों को भी सहायता उपलब्ध करवाने के लिए प्रतिबद्ध है. एक साथ मिलकर सकारात्मक तरीके से ही इस लड़ाई को जीता जा सकता है.

भाषा ने बैंक के व्यवसाय संग्रहण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है और अब इस विकट परिस्थिति से लड़ने के लिए भी भाषा का संबल अच्छे परिणाम लाएगा. पठन-पाठन हमेशा से जीवन को एक नई दिशा दिखाने का कार्य करता है और आगे भी करता रहेगा.

किसी शायर ने कहा है- **वक्त की गर्दिशों का ग़म न करो, हौसले मुश्किलों में पलते हैं.** जल्द ही परिस्थितियां सामान्य होंगी. इस आशा के साथ, स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें.

शुभकामनाओं सहित,

शांति लाल जैन

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की तिमाही हिन्दी पत्रिका *अक्षय्यम्* के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है. यह पत्रिका देश भर के कार्यालयों में राजभाषा के माध्यम से बैंक की बेहतरी के लिए किए जा रहे प्रमुख प्रयासों को साझा करने का एक श्रेष्ठ माध्यम है. निरंतरता प्रकृति का नियम है और सक्रियता मानव के विभिन्न गुणों में से एक है. मुख्य बात यह होती है कि हम अपनी सक्रियता का प्रयोग किस दिशा में और किस उद्देश्य के लिए करते हैं. निरंतर आगे बढ़ने की विशेषता के चलते ही मानव समाज आज अपने सामने आई सभी चुनौतियों पर जीत हासिल करते हुए इतना लंबा सफ़र तय कर पाया है.

वर्तमान परिस्थिति में पूरी दुनिया में छाये कोरोना संकट की ही सबसे अधिक चर्चा हो रही है. संपूर्ण विश्व इस महामारी से बचने और इसका स्थायी इलाज ढूंढने की दिशा में एकजुट हो कर प्रयास कर रहा है. यह भी सच है कि हम प्रत्येक परिस्थिति में स्वयं को उसके अनुकूल ढालने में सफल हुए हैं. जिस तरह पहाड़ों के बीचोबीच नदी आगे बढ़ने के लिए अपना रास्ता तलाश लेती है, हम भी अपनी विकास यात्रा को आगे बढ़ाने का कोई न कोई रास्ता ढूंढ ही लेते हैं.

मौजूदा संकट काल में बैंक भी ऐतिहासिक भूमिका निभा रहे हैं. देश के सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा समाज हित में प्रदान की जा रही बैंकिंग सेवाओं को आज समाज कल्याण के रूप में देखा जा रहा है. इस प्रकार आज बैंकों की भूमिका को केवल लाभ अर्जन की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता है. बैंक समाज में आर्थिक सहायता पहुंचाने के साथ-साथ लोगों के बीच स्वस्थ रहने की जागरूकता को भी फैला रहे हैं. इस दौर में हम सभी स्टाफ सदस्यों की भूमिका बहुत ही अहम् है. हम एक ऐसे पड़ाव पर खड़े हैं जहां हमें पुरानी पीढ़ी को संभाल कर लेकर चलना है और नई पीढ़ी को सुरक्षित रख कर आगे बढ़ना है. हमें यह जिम्मेदारी समझनी होगी. अभूतपूर्व संकट के इस दौर में आपसी सहयोग, समन्वय और भरोसे की अधिक आवश्यकता है.

इस चुनौतीपूर्ण दौर में विशेष कर शाखा में पदस्थ स्टाफ सदस्यों की साहसिक बैंकिंग सेवाओं की जितनी सराहना की जाए वो कम है. मुझे खुशी है कि इस दौर में आप सभी ने अपनी जिम्मेदारी को निभाने की प्रतिबद्धता को एक बार फिर से साबित किया है.

शुभकामनाओं सहित,

विक्रमादित्य सिंह खीची

कार्यपालक निदेशक के डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की गृह पत्रिका *अक्षय्यम्* के इस नवीनतम अंक के माध्यम से पहली बार आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है. यह पत्रिका हमारी जिज्ञासाओं को पूरा करने के साथ ही साथ हमारे परस्पर समन्वय, सद्भाव एवं उन्नयन का उत्कृष्ट माध्यम है.

आज के परिदृश्य में भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व जिस आपदा के दौर से गुजर रहा है, उससे बैंकिंग उद्योग अछूता नहीं है. ऐसे में जन सामान्य की अनिवार्य आवश्यकताओं जिसमें बैंकिंग सेवा प्रमुख है, उसे जन-जन तक पहुंचाने के लिए हम सभी सदा तत्पर हैं. विशेष रूप से जन सामान्य से जुड़ी भारत सरकार की उन योजनाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन में हमारी महत्वपूर्ण भूमिका रही है. मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी समर्पित टीम इन विपरीत परिस्थितियों में भी पूरी दक्षता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करती रहेगी. बैंकिंग, सेवा क्षेत्र एवं अनिवार्य आवश्यकताओं की सूची में सूचीबद्ध है, अतः हमें बैंकिंग सेवा की गुणवत्ता को बनाए रखते हुए अपने नए प्रयासों को भी जारी रखना है. हम सभी इसके साक्षी हैं कि अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों की तरह बैंक और विशेष रूप से हमारा बैंक इस विपदा की स्थिति में भी कदम-कदम पर अपने ग्राहकों के साथ है.

हमारा बैंक सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र में ग्राहकोन्नमुखी नए-नए उत्पाद विकसित करने की दिशा में सदा ही अग्रणी रहा है. आज के परिप्रेक्ष्य में ग्राहकों द्वारा हमारे डिजिटल बैंकिंग के अधिक से अधिक उत्पादों का इष्टतम उपयोग अत्यधिक आवश्यक हो गया है. इससे न सिर्फ ग्राहकों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकेगी, अपितु वैश्विक महामारी के संक्रमण को नियंत्रित करने में भी सहायता मिलेगी और इस प्रकार हम अपने जीवन के हर पहलू को प्रभावित करने वाली महामारी को पराजित करने में सफल होंगे.

हमारे बैंक में बैंकिंग के साथ राजभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं का सामंजस्य हमेशा से ही रहा है. हमारी गंभीरता, हमारे संगठित प्रयास और हमारी टीम भावना राजभाषा की अविराम यात्रा को जारी रखने में निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होंगे. राजभाषा क्रियान्वयन के स्तर पर स्थापित यह मिसाल हमारे बैंक को राष्ट्रीय स्तर पर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की श्रेणी में सर्वोत्तम स्थान प्रदान करती है. हमें इस स्वस्थ परंपरा को सर्वदा जारी रखना है.

आज की विपरीत परिस्थितियों में हम सभी के सामने असंख्य चुनौतियां हैं. ऐसे में मुझे पूरा यकीन है कि हमारे संयोजित प्रयास हमें इन सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षमता प्रदान करते हुए हमारी बैंकिंग यात्रा को सुगम बनाने में सहायक होंगे.

मैं पत्रिका के नवीनतम अंक के माध्यम से अपनी हार्दिक मंगलकामनाएं देते हुए यह आशा करता हूं कि आने वाला समय आप सभी के लिए सुखद हो.

शुभकामनाओं सहित,

(ए. के. खुराना)

कार्यकारी संपादक की कलम से...

प्रिय साथियो,

'अक्षय्यम्' के माध्यम से आप सभी से संवाद करना मुझे सुखद अनुभूति दे रहा है. यह एक विशेष अवसर है जब मैं आप तक अपनी बात इस माध्यम से रख रहा हूं. बैंकिंग क्षेत्र में काम करते हुए हमें संवाद के कई स्वरूपों से गुजरना होता है. मौजूदा परिस्थितियों के कारण भी हमारे परस्पर संवाद के तरीकों में परिवर्तन आया है. कई नई तकनीकों के माध्यम से हम परस्पर संवाद कर रहे हैं. तरीका चाहे कोई भी हो, संवाद की प्रक्रिया में भाषाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. भारत में सदियों से कई भाषाओं का अस्तित्व में रहना देश की विभिन्न विशेषताओं में से एक है.

किसी भी संवाद की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि यह कितनी सटीकता से लक्ष्य तक अपनी बात संप्रेषित कर सकता है. संप्रेषण की यह प्रक्रिया हमारे बैंक के आंतरिक और बाहरी संवाद दोनों के लिए ही अनिवार्य है. आंतरिक कार्यप्रणाली में हमें अपने बैंक में विभिन्न कार्यालयों के बीच अलग-अलग प्रकार से संप्रेषण की जरूरती पड़ती है जो कई नीति-नियमों, निर्देशों, आदेशों के अनुपालन और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिहाज से महत्वपूर्ण है. वहीं बाहरी संप्रेषण की बात करें तो हमें दूसरे सरकारी कार्यालयों, महकमों और ग्राहकों तक अपनी बात पहुंचाने की जरूरत पड़ती है. हम जानते हैं बैंकिंग कार्यप्रणाली में ग्राहक सेवा की भूमिका सबसे प्रमुख है. ग्राहक सेवा बैंकिंग व्यवसाय की रीढ़ है. हमारी व्यवसाय वृद्धि हमारे ग्राहक-आधार पर ही निर्भर है. निरंतर ग्राहक-आधार बढ़ाने हेतु हम ग्राहकों को कई तरह की सुविधाएं और उत्पाद उपलब्ध कराते हैं. इन उत्पादों में ग्राहकों की सुविधाओं और उनकी मांग का विशेष ध्यान रखा जाता है. अपनी सेवाओं और उत्पादों से अधिक से अधिक ग्राहकों को जोड़ने के लिए हमें अपनी सेवाओं और उत्पादों की विशेषताओं को उन तक पहुंचाना होता है. हम यह कार्य उनसे संवाद के जरिए ही कर सकते हैं. इस प्रक्रिया में हमें उन भाषाओं का चयन करना होता है जो हमारे ग्राहक को आसानी से समझ में आ जाएं. इस प्रकार भारतीय भाषाएं हमें अपने ग्राहक-आधार को बढ़ाने में मदद करती हैं जो अंततः बैंक की व्यवसाय वृद्धि में परिलक्षित होता है.

बैंक की पत्रिका *'अक्षय्यम्'* हमें निरंतर आपस में जोड़े रखती है. हम इसके जरिए पाठकों के लिए कई ज्ञानवर्धक और पठनीय सामग्री प्रस्तुत करते आए हैं. यह बैंक के स्टाफ सदस्यों को भी अपने विचार रखने और अपनी रचनात्मकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. आशा करता हूं कि पत्रिका का यह अंक आपको अवश्य ही पसंद आएगा और इसे लगातार बेहतर बनाने में आप भी अहम योगदान देते रहेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

के. आर. कनोजिया

अपनी बात

जब दुख के बादल पिघलेंगे, जब सुख का सागर छलकेगा
जब अम्बर झूम के नाचेगा, जब धरती नग़्मे गाएगी
वो सुब्ह कभी तो आएगी..... वो सुब्ह कभी तो आएगी...

काफी लम्बे समय बाद सुनी साहिर लुधियानवी जी की यह नज़्म. बड़ी प्रासंगिक लगी. आज हर चेहरे पर यह अनपूछा सवाल नज़र आता है कि सब पहले जैसा कब हो जाएगा? कब हम मित्रों को तपाक से गले मिल पाएंगे? कब शाम को 'वॉकिंग' पर निकले चाचा का बढ़ा हुआ हाथ आत्मीयता से थाम ले सकेंगे? कब घर के पास खेलते हुए बच्चों के माथों पर बिखरे बालों को प्यार से संवार पाएंगे? यह 'सोशल डिस्टेन्सिंग' हम भारतीयों के बस की बात नहीं है. भीड़, हल्ला-गुल्ला, नृत्य-गान, खान-पान, सहभोज का उत्सव मनाने वाले, पीठ पर धौल जमा कर या किसी अपने के मुंह में मिठाई ठुंस कर प्यार जताने वाले, सामाजिक निकटता की आदत रखने वाले हम भारतीयों के लिए यह स्थिति कैद के समान है. इसलिए तो प्राय: मीडिया के शब्दों में कहें तो जब-तब सोशल डिस्टेन्सिंग की धज्जियां उड़ाते लोग नज़र आते हैं.

महामारी के प्रकोप के डर से यह स्थिति तो फिर भी सह्य बन सकती है, असह्य लगता है अपार कष्ट उठा कर, तकलीफें सहन कर घर लौट रहे हजारों श्रमिकों की वेदना को देखना. भूख, प्यास, थकान, डर, अनिश्चितता से लिप्त चेहरों की व्यथा को कोई शायद ही कभी भूल पाए. इस विकट दौर से गुजरना हमारी नियति है.

लेकिन ऐसी विषम स्थितियों में भी नियति हमें राहत के ऐसे कुछ क्षण दे ही देती है, जो हमारे लिए नई उम्मीद जगाते हैं, हममें आशा का संचार करते हैं, हमें हौसला देते हैं. चिकित्सा-कर्मी, पुलिस-कर्मी, बैंकर्स, कई समाज-सेवी संस्थाएं और व्यक्ति जिस जुझारूपन से अपना कर्तव्य निभाते हुए प्रयत्नशील हैं, देख कर लगता कि हम जीतेंगे ही.

लड़ाई जारी है... अब भी सम्हल कर रहना है,
परस्पर सहायक बनना है, जीतना है हमें....

शुभकामनाओं के साथ,

पारुल मशर

अपनी संस्कृति को संजोए रखना बहुत जरूरी है: अरुण गोविल

'समाज के उत्थान में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की भूमिका अहम्'

*महान अभिनेता **श्री अरुण गोविल** किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं. विश्व स्तर पर उनका नाम और चेहरा लोगों के ज़ेहन में गहराई से बसा हुआ है. वर्ष 1987 में रामानंद सागर द्वारा निर्मित रामायण में भगवान श्री राम का किरदार निभाने वाले श्री अरुण गोविल का नाम ही उनकी एक नई पहचान बना. इस भूमिका ने उनके व्यक्तित्व को कभी न भूलने वाली एक बड़ी हस्ती के रूप में स्थापित किया. रामायण में भगवान श्री राम की भूमिका में अपने स्वभाव में जो शालीनता और सौम्यता उन्होंने दिखाई है, निजी जीवन में भी ठीक यही शिष्टता और विनम्रता उनके व्यवहार में परिलक्षित होती है. हम विरले ही ऐसे किसी व्यक्तित्व से रू-ब-रू होते हैं जो अपने प्रारंभिक जीवन से ही समाज हित के लिए समर्पित हों. निश्चित रूप से इस किरदार को सदियों तक नेक विचारों के प्रसारक के रूप में जाना जाएगा. लॉकडाउन के दौर ने हम सभी को एक बार अपने अतीत की ओर झांकने का अवसर दिया है. इसी प्रसंग में 'अक्षय्यम्' के सहायक संपादक **अम्ब्रेश रंजन कुमार** ने महान अभिनेता श्री अरुण गोविल से विस्तृत बातचीत की. हम अक्षय्यम् के पाठकों के लिए इस बातचीत के प्रमुख अंश प्रस्तुत कर रहे हैं :*

1. **कृपया अपनी पारिवारिक एवं शैक्षणिक पृष्ठभूमि के बारे में बताएं.**

   मेरा जन्म 12 जनवरी 1952 को उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हुआ. मेरी स्कूली पढ़ाई मेरठ में ही संपन्न हुई. मैंने आगरा विश्वविद्यालय से बीएससी की पढ़ाई पूरी की. मेरा एक बेटा और एक बेटी है. स्कूल के दिनों से ही मैं अभिनय में भाग लेने लगा था. पढ़ाई समाप्त करने के बाद मैं मुंबई आ गया.

2. **फिल्मों से जुड़ने के पीछे कौन सी प्रेरक भावभूमि रही?**

   विद्यार्थी दिनों से ही अभिनय में मेरी रूचि थी. कॉलेज के दिनों में भी मैं स्टेज अभिनय करता था. मेरी इच्छा थी कि मेरी अपनी पहचान हो और लोग मुझे मेरे नाम से जानें. मैंने सोचा कि फिल्मों से जुड़कर मैं अपनी एक अलग पहचान बना सकता हूं. हालांकि, शुरू में मैंने ऐसा सोचा नहीं था कि मैं कभी फिल्मों में जाऊंगा परंतु मुंबई आने के बाद मैंने यह तय किया कि यदि अपनी अलग पहचान बनानी है तो फिल्मों से जुड़कर इस दिशा में कोशिश की जा सकती है. इस तरह मैंने अपने इस प्रयास को आगे बढ़ाया और राजश्री पिक्चर ने मुझे ब्रेक दिया.

3. **आपने फिल्म उद्योग में अपने कैरियर की शुरूआत कैसे की?**

   फिल्मों में मुझे काफी देर से ब्रेक मिला. मुझे 1977 में पहला ब्रेक राजश्री पिक्चर ने दिया. शुरू की चार फिल्में *पहेली, सावन को आने दो, सांच को आंच नहीं* और *राधा और सीता* थी. इनमें मेरी पहली फिल्म थी – *पहेली*. बाद में भी इनके साथ *जियो तो ऐसे जियो* फिल्म की. वर्ष 1987 में रामायण का प्रसारण हुआ और उससे पहले मैंने रामानंद सागर साहब के साथ ही '*बिक्रम और बेताल*' किया था. उनके कैंप में आनंद सागर के साथ *बादल* फिल्म भी की.

4. **आपने विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय धारावाहिक रामायण में भगवान श्री राम का किरदार निभाया है. इस भूमिका के लिए आपके चयन के पीछे क्या पृष्ठभूमि रही?**

   मैंने उस समय जानबूझ कर यह किरदार नहीं निभाया. दरअसल, उस समय पौराणिक कथाओं से जुड़ा अभिनय करना काफी स्तरीय नहीं माना जाता था. उस समय पौराणिक कथाओं पर फिल्में भी कम ही बनती थीं. रामायण में अभिनय को लेकर लोगों ने मुझे हतोत्साहित करने का भी काम किया. एक तरह से लोगों ने मुझे इस भूमिका को निभाने के लिए मना किया. बहरहाल, मैंने रामायण में श्री राम का किरदार निभाया और इसने मेरी एक अलग छवि निर्मित की. इस कारण वास्तव में मुझे रामायण के बाद कुछ अलग भूमिका निभाने का अवसर भी कम ही मिलता था क्योंकि मैं श्री राम के किरदार के रूप में ही लोगों के ज़ेहन में बैठ गया.

5. **संपूर्ण देश दूरदर्शन पर रामायण के पुनः प्रसारण की प्रशंसा कर रहा है. आज के समय में रामायण का प्रसारण समाज के लिए कितना महत्वपूर्ण है?**

रामायण समाज के लिए हमेशा महत्वपूर्ण है. यह हम सभी के लिए हर हाल में, हर समय में और हर परिस्थिति में अहम् है. रामायण की प्रासंगिकता पहले भी थी और आज भी है. रामायण का पुनः प्रसारण बहुत अच्छा और उपयोगी है. इस दौर में अधिकतर लोग घर पर भी हैं. पहले भी लोगों ने दूरदर्शन पर रामायण को जल्दबाज़ी में नहीं बल्कि बहुत अच्छे से देखा और समझा है.

रामायण में दिए गए संदेश समाज के लिए बहुत प्रासंगिक और उपयोगी हैं. रामायण से हमें यह सीख मिलती है कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए. यहां तक कि हमें यह भी बताता है कि शत्रु में क्या गुण होने चाहिए. हमारे अंदर भी क्या-क्या विशेषताएं होनी चाहिए, हम क्या करेंगे तो हमें क्या प्राप्त होगा और हम क्या गलत करेंगे तो इसका क्या नुकसान होगा, शत्रुता भी करें तो कैसे करें? कॉलेज-स्कूल से लेकर जीवन के हर स्तर में रामायण के संदेश का अनुसरण उपयोगी है.

6. **मौजूदा परिस्थिति ने संपूर्ण विश्व के अंधाधुंध विकास की होड़ पर लगाम लगा कर हमें कुछ सोचने पर विवश किया है. ऐसी घड़ी में हर तरफ सामाजिक और मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं की चर्चा की जा रही है. एक जागरूक हस्ती होने के नाते प्रकृति के इस संदेश पर आपकी क्या राय है?**

हमें प्रकृति के संदेशों को मानना ही चाहिए. शास्त्रों में भी लिखा है कि हमें प्रकृति का किस तरह से आदर करना चाहिए. प्रकृति ने जो नियम बनाए हैं उनका हमें पालन करना चाहिए. यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो प्राकृतिक आपदाएं आने से लेकर ऐसी कई विपरीत परिस्थितियां हमारे सामने उत्पन्न होती हैं. वास्तव में प्रकृति ने हर चीज को संतुलित कर के रखा है, पूरे पर्यावरण में एक संतुलन बना के रखा है. आज विकास के क्रम में हम यह संतुलन तोड़ रहे हैं. विकास भी बहुत जरूरी है, पर विकास की राह में भी हमें प्रकृति में संतुलन बना कर चलना चाहिए. हमें हर दिशा का ध्यान रखना चाहिए.

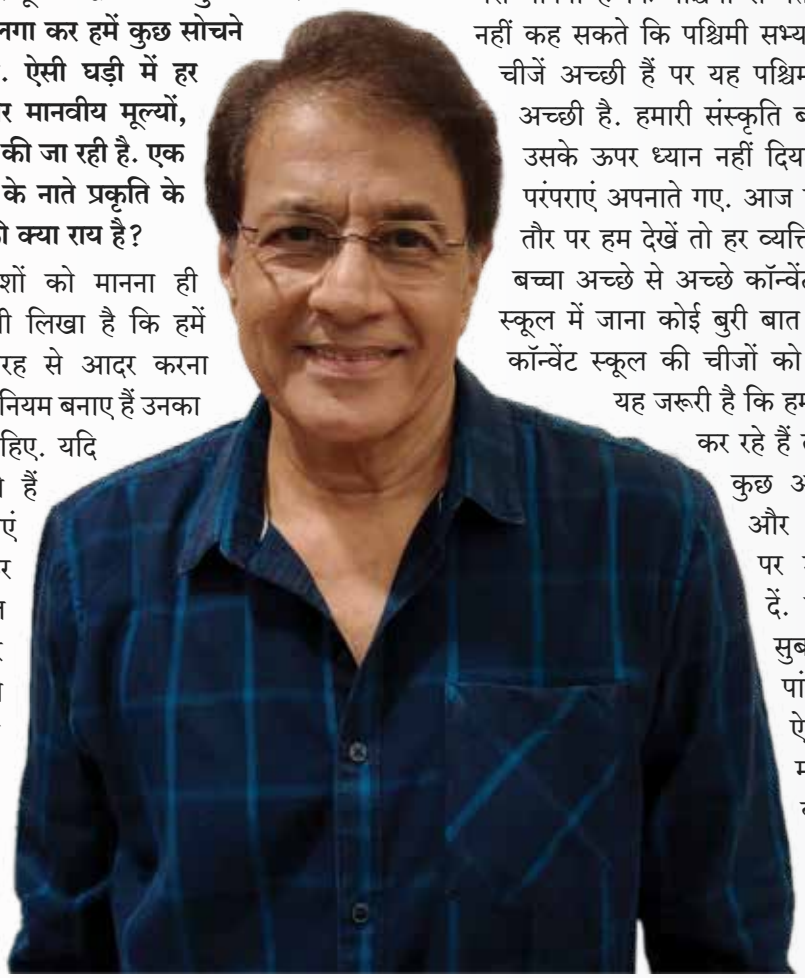

7. **रामायण ने भारतीय संस्कृति और भाषा को हर घर और हर परिवार तक पहुंचाया है. आपके अनुसार अपनी संस्कृति और भाषा को संजोये रखना कितना महत्वपूर्ण है?**

अपनी संस्कृति और भाषा को संजोए रखना बहुत जरूरी है. भाषा भी संस्कृति का ही भाग है, हम भाषा को संस्कृति से अलग कर नहीं देख सकते हैं. संस्कृति ऐसी होनी चाहिए जैसे कि पेड़ की जड़ होती है. जब तक जड़ मजबूत नहीं होगी तब तक वृक्ष अच्छे से फलेगा-फूलेगा नहीं. इस तरह से हम मानवों के लिए संस्कृति बहुत जरूरी है. इसे हमें कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि यदि हम जड़ छोड़ देंगे तो हम न इधर के रहेंगे न उधर के रहेंगे. आज हो क्या रहा है कि जबसे पश्चिमी सभ्यता का प्रसार बढ़ा है, इसने हमारी जीवनशैली पर बहुत हद तक असर डाला है.

मेरा मानना है कि पश्चिमी सभ्यता बुरी नहीं है, हम यह नहीं कह सकते कि पश्चिमी सभ्यता खराब है. इसमें कई चीजें अच्छी हैं पर यह पश्चिमी देशों के लिए ज्यादा अच्छी है. हमारी संस्कृति बहुत समृद्ध है, पर हमने उसके ऊपर ध्यान नहीं दिया, हम दूसरी चीजें और परंपराएं अपनाते गए. आज एक छोटे से उदाहरण के तौर पर हम देखें तो हर व्यक्ति यह चाहता है कि मेरा बच्चा अच्छे से अच्छे कॉन्वेंट स्कूल में पढ़े. कॉन्वेंट स्कूल में जाना कोई बुरी बात नहीं है लेकिन हम उस कॉन्वेंट स्कूल की चीजों को अपने घर ले आते हैं. यह जरूरी है कि हम पढ़ाई कॉन्वेंट स्कूल में कर रहे हैं तो कॉन्वेंट स्कूल संबंधी कुछ आचार-विचार वहीं रखें और घर के आचार-विचार पर उसका प्रभाव न पड़ने दें. पहले यह होता था कि सुबह उठकर लोग बड़ों के पांव छूते थे पर आज कोई ऐसा नहीं करता है. आज मां बाप यह शिक्षा बच्चों को नहीं देते हैं. फिर बच्चा बड़ा हो जाता है तो मां-बाप बोलते हैं कि अरे, ये क्या हो

गया? बच्चा हमारी इज्जत ही नहीं करता है. आज बड़े भाई, छोटे भाई का रिश्ता भी बिखरा लगता है. पति-पत्नी, भाइयों के रिश्ते, देवर-भाभी जैसे रिश्तो में खटाई दिखती है. इस प्रकार हमें यदि अपने जीवन में सुख शांति चाहिए तो अपनी संस्कृति को अपनाए रखना बहुत जरूरी है.

हमारी संस्कृति हमें इमानदारी और कर्तव्य पालन का, निजी स्वार्थ और लोभ के त्याग का संदेश देती है. इन संदेशों को अपने व्यवहार में शामिल करना बहुत जरूरी है. हम निजी स्वार्थ और लोभ के बगैर भी एक अच्छा जीवन जी सकते हैं.

8. **भूमंडलीकरण के दौर में नई पीढ़ी के जरिए हम अपनी संस्कृति और विरासत को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं?**

हमें अपनी संस्कृति को आगे ले जाना ही होगा. हम इसके लिए स्वयं प्रयत्न करें. उदाहरण के लिए जैसे हम रामायण या कोई भी सामाजिक संदेश देने वाला कार्यक्रम देखते हैं तो हम इसे मनोरंजन के लिहाज से न देखें, हम यह देखें कि हमें इससे क्या सीख मिल रही है. संस्कृति और विरासत को आगे ले जाना हमारा अपना काम है. हम करेंगे तभी यह संभव होगा, हमारे लिए यह कार्य कोई दूसरा नहीं करेगा. इसे अपनाए बगैर हमारे पास कोई विकल्प भी नहीं है. इसके लिए यह जरूरी है कि हम अपने जीवन में अच्छी चीजें देखें और व्यवहार में उतारें. भौतिकतावाद ने हमारे जीवन पर धूल की परत चढ़ा दी है, हमें उसे साफ करने और आत्मावलोकन करने की जरूरत है.

9. **आपके अनुसार हम एक स्वस्थ दिनचर्या और अनुशासित जीवन-शैली को किस प्रकार विकसित कर सकते हैं?**

मेरे हिसाब से इस प्रश्न का उत्तर भी आत्मावलोकन ही है. हमें यह जानना चाहिए कि क्या हम अनुशासित हैं? हमें स्वयं से यह सवाल करना चाहिए, इसके साथ ही हमें अपने प्रति ईमानदार होना चाहिए. जब यह हमें समझ में आ जाएगा, हम ये सारी चीजें स्वयं में विकसित कर सकते हैं.

10. **आज विभिन्न स्तरों पर देश की राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के बारे में आपके क्या विचार हैं?**

हिन्दी हमारी राजभाषा है. इसका प्रचार जरूर होना चाहिए. पर दक्षिण भारत में जहां हिन्दी समझने वाले बहुत कम हैं, वहां हमें हिन्दी के प्रयोग के दृष्टिकोण को भी देखना चाहिए. इसके अलावा इसका दूसरा पहलू यह भी है कि आज हिन्दी भाषी क्षेत्र में ही हिन्दी पढ़ने लिखने वाले कम हो गए हैं. बीते दिनों में बड़े अच्छे कवि और उपन्यासकार हुए हैं. पहले इतनी अच्छी किताबें लिखी जाती थीं, जो बहुत स्तरीय थीं. आज लेखन में इस उत्कृष्टता में कमी आई है. हिन्दी की पत्रिकाएं कम हो गई हैं. मैं मानता हूं कि भाषा ऐसी चीज़ है जिससे हम अंदर से जुड़े होते हैं. मुझे नहीं लगता कि भाषा को एक दूसरे पर दबाव डालकर थोपना चाहिए, बल्कि ऐसा कुछ करना चाहिए कि लोगों को लगे कि यह भाषा अच्छी है और हमें बहुत सारी चीज़ें जो अन्य भाषाओं में नहीं मिलती वे इसमें मिलेंगी. इसके अलावा हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हमें हिन्दी का प्रयोग करना ही चाहिए.

11. **समाज के उत्थान में आप सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की भूमिका को कैसे देखते हैं?**

समाज के उत्थान में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की भूमिका बहुत बड़ी है. क्षेत्र का कोई भी विकास-कार्य हो, इसमें धन की जरूरत होती है और इसमें बैंक ही काम आते हैं. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का ग्राहक-आधार भी बहुत बड़ा है. समाज के प्रत्येक स्तर तक पहुंच होने के नाते ये विकास कार्यों में बड़ी भूमिका निभाते आए हैं. मैं समझता हूं कि पहले की बैंकिंग और आज की बैंकिंग में बहुत परिवर्तन आए हैं और आज बैंकिंग सेवाएं ग्राहकों के लिए अधिक सुविधाजनक हैं. बैंकों में कस्टमर-फ्रेंडली वातावरण भी बना है. बैंकिंग सेवाओं को और ग्राहक-केंद्रित बनाया जाना चाहिए जिससे समाज में इनकी भूमिका और बढ़े. बैंकों के बिना जीना बहुत मुश्किल है.

12. **देश के युवाओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?**

देश के युवाओं को मैं यह संदेश देना चाहूंगा कि यदि आप सिर्फ अपने लिए कुछ करते हैं तो एक स्तर पर यह पता चलेगा कि वह काफी नहीं है. यह बात भी सही है कि सबके लिए कुछ करना सबके लिए संभव नहीं है और सभी में इस सेवा की भावना भी नहीं होती है. मैं यह भी कहूंगा कि युवा अपनी संस्कृति को अपनाए. अपनी संस्कृति को अपनाए रखने का यह अच्छा परिणाम होता है कि हमारा जीवन सुख और शांति से व्यतीत होता है. हम सभी परिवार में रहते हैं. हम जीवनयापन के लिए नौकरी या व्यवसाय करते हैं. हर स्थान पर हमारे सहयोगी होते हैं, हम उनके लिए भी जीएं और हम लोभ और स्वार्थ न रखें. हम देश, मातृभूमि, जन्मदाता, प्रकृति की भलाई के लिए कार्य करें. इनके प्रति कर्तव्य को निभाएं और अपनी संस्कृति को न भूलें.

कोरोना का विश्व की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

कोविड -19 के रूप में जाना जाने वाला कोरोना वायरस जनित रोग एक घातक बीमारी है जिसने दुनिया भर में मानव आबादी को प्रभावित किया है. आज कोरोना वायरस का प्रकोप पूरी दुनिया में फैल चुका है. वित्तीय बाज़ारों में हाहाकार मचा हुआ है. निवेशकों को हर हफ़्ते ख़रबों डॉलर की क्षति हो रही है.

कोरोना वायरस प्रकोप के चलते पूरे विश्व में इस महामारी से लड़ने के लिए 'लॉकडाउन' का सहारा लिया गया है, जिसकी वजह से बाज़ार में तरलता की कमी महसूस हो रही है. भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर ने कहा है कि कोरोना संकट के बीच रिज़र्व बैंक सभी हालात पर नजर रखे हुए है, कदम-कदम पर उचित फैसले लिए जा रहे हैं. कोरोना संकट की वजह से जीडीपी की रफ्तार घटेगी, लेकिन बाद में ये फिर तेज रफ्तार से दौड़ेगी. उन्होंने कहा, 'हम पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर नजर रख रहे हैं. भारत के हालात दूसरे देशों से काफी बेहतर हैं.'

कोरोना वायरस की वजह से वैश्विक अर्थव्यवस्था मंदी की ओर बढ़ रही है. इसलिए सुरक्षित निवेश के रूप में दुनिया में सोने की मांग बढ़ जाने से इसकी कीमत तेजी से ऊपर जा रही है. इसके अलावा डॉलर की तुलना में रुपये की कीमत रिकॉर्ड-लो स्तर पर आने की वजह से भी घरेलू बाज़ार में सोने की कीमत बढ़ी है.

अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष समेत कई एजेंसियों ने चालू वित्त वर्ष के लिए भारत की आर्थिक वृद्धि का अनुमान काफी कम कर दिया है. सूत्रों के अनुसार अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष की बैठक के दौरान विश्व अर्थव्यवस्था की स्थिति पर चर्चा हुई. भविष्य की चुनौतियों से पार पाने के लिये कोष जुटाने पर भी गौर किया गया है.

विश्व बैंक के ताजा अनुमान के अनुसार कोरोना महामारी के चलते भारत की वृद्धि दर वर्ष 2020 में 1.5 से 2.8 प्रतिशत के बीच रह सकती है. इसी प्रकार, आईएमएफ ने जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) की वृद्धि दर 1.9 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया है. महामारी और उसकी रोकथाम के लिये देशव्यापी बंद के कारण एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम), होटल, नागर विमानन, कृषि और संबद्ध क्षेत्रों पर व्यापक प्रभाव पड़ा है.

कुछ समय पूर्व कोरोना वायरस का संक्रमण फैलने से पहले, दुनिया के कई बड़े निर्यातक देशों में उत्पादन सेक्टर लगातार गिरावट की ओर बढ़ रहा था. व्यापारिक संघर्ष के तनावों की वजह से जो अनिश्चितता उत्पन्न हुई थी, उसके कारण जापान, जर्मनी और दक्षिणी कोरिया जैसे कई देशों में मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर का आउटपुट क्षीण हो रहा था और मैन्यूफ़ैक्चरिग का वैश्विक पीएमआई 50 प्रतिशत से भी नीचे चला गया था. जिसका मतलब था कि वर्ष 2019 में विश्व की अर्थव्यवस्था आधिकारिक रूप से सिमट रही थी. उत्पादन की इस गिरावट के दौरान, सेवा क्षेत्र और उपभोक्ता बाज़ार के विस्तार के चलते विश्व अर्थव्यवस्था की गतिविधियों में प्रगति हो रही थी. दुनिया में रोज़गार के नए अवसर उत्पन्न हो रहे थे. दुनिया के विकासशील देश हों या विकसित देश, दोनों ही में सेवा क्षेत्र और उपभोक्ता बाज़ार में रोज़गार के अधिकतर अवसर उत्पन्न हो रहे थे. इन्हीं के कारण वित्तीय बाज़ारों में उछाल आ रहा था और निवेश पर अच्छा रिटर्न मिल रहा था.

आज कोरोना वायरस के संक्रमण ने सीधे उपभोक्ता केंद्रों यानी चीन और एशिया की अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं पर प्रहार किया है जिस वजह से विकास की गतिविधियां ठहर गई हैं.

कोरोना वायरस के प्रभाव से तमाम कच्चे माल और तैयार माल की सप्लाई चेन में आ रहे बदलाव बेहद महत्वपूर्ण हैं. वर्ष 2007-2008 के वैश्विक आर्थिक संकट के बाद की दुनिया में बहुत सी कंपनियां अपने उत्पादनों के मूल्य का निर्धारण करने की क्षमता खो चुकी हैं. अब उनका निर्धारण ग्राहकों के हाथ में चला गया है. इसी वजह से वे टैरिफ़ बढ़ने से बढ़ी लागत के बावजूद अपने उत्पादनों का मूल्य बढ़ाने में असमर्थ साबित हो रही हैं. लेकिन, आज कोरोना वायरस के कारण बहुत सी ऐसी कंपनियों के पास अपने सामान की क़ीमतें बढ़ाने के सिवा कोई चारा नहीं बचा है. इसीलिए ऐसी बहुत सी कंपनियों को यह भय है कि उनके ग्राहक हाथ से निकल जाएंगे.

आज कोरोना वायरस को लेकर जिस तेज़ी से भय फैल रहा है, इसी वजह से हमें विश्व अर्थव्यवस्था के भविष्य के सबसे भयानक चेहरे की ओर देखने को मजबूर होना पड़ रहा है. बहुत से विश्लेषक, कोरोना वायरस के बाद विश्व अर्थव्यवस्था में 'वी' के आकार की प्रगति के पथ पर वापसी की संभावना दिखा रहे हैं. कुछ विश्लेषक ये मानते हैं कि कोरोना वायरस का विश्व अर्थव्यवस्था पर सीमित रूप से ही प्रभाव पड़ेगा. अगर यह वायरस एक महामारी के तौर पर दुनिया में फैलता रहा, तो अर्थव्यवस्था को तगड़ा झटका लग सकता है. यहां तक कि दुनिया भर के केंद्रीय बैंकों की तरफ़ से उदार मौद्रिक नीतियों और कम आक्रमक नीतियां अपनाने की प्रतिबद्धता जताने के बावजूद लोगों को आर्थिक गतिविधियों में फिर से शामिल करने का हौसला नहीं मिल पा रहा है. ऐसा लग रहा है कि वायरस के संक्रमण की आशंका और भय के कारण सेवा क्षेत्र और हॉस्पिटैलिटी सेक्टर की गतिविधियों में दोबारा सक्रियता लौटने में काफ़ी समय लग सकता है. दुनिया भर में तेजी से फैल रहे घातक कोरोना वायरस ने वैश्विक अर्थव्यस्था को बुरी तरह से प्रभावित किया है. इसके चलते वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग और आपूर्ति दोनों पर असर पड़ा है.

इसका असर शेयर बाज़ारों पर भी पड़ रहा है. तेल की बढ़ी आपूर्ति और मांग में कमी के बीच विश्व स्वास्थ्य संगठन की तरफ से कोरोना पर 24 जनवरी को हुई पहली बैठक के बाद से अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में 50 फीसदी की गिरावट आ चुकी है.

कोरोना का दुनिया के व्यवसायों पर असर साफ तौर पर देखा जा सकता है, जहां कंपनियां अपने ऑपरेशंस कम कर रही हैं, कर्मचारियों से यह कहा जा रहा है कि वे घरों से काम करें और उत्पादन के लक्ष्य को कम किया जा रहा है.

एशियन डेवलपमेंट बैंक ने बताया है कि विकासशील एशियाई अर्थव्यवस्था पर कोरोना का व्यापक असर होगा और यह अनुमान लगाया है कि कोरोना से दुनिया की अर्थव्यवस्था को 77 बिलियन डॉलर से 347 बिलियन तक यानी वैश्विक जीडीपी के 0.1 प्रतिशत से 0.4 प्रतिशत तक का नुकसान हो सकता है.

गोल्डमेन सैच्स की रिपोर्ट के अनुसार, कोरोना वायरस के चलते चीन की अर्थव्यवस्था में रुकावट आने और वर्ष 2008 में आई आर्थिक मंदी के बाद अब तक का यह वस्तुओं की मांग को लेकर सबसे बड़ा झटका है. कोरोना के चलते चीन में वर्ष 2020 के फरवरी में उत्पादन और गैर-उत्पादन गतिविधियों में ऐतिहासिक गिरावट हुई है.

जेपी मॉर्गन की रिपोर्ट के अनुसार इस महामारी का असर वर्ष 2020 की दूसरी तिमाही में देखा जाएगा और इसका असर सोशल डिस्टेंसिंग के बाद समुद्री पर्यटन, एयर लाइंस, होटल्स, कसिनो, खेलों को कार्यक्रम, मूवीज, थिएटर्स, रेस्टुरेंट और अन्य उद्योगों पर होगा. उन्होंने अंदेशा जताया कि इसका अमेरिका समेत दुनियाभर की अर्थव्यवस्था पर सीधा असर होगा और आने वाले महीने में कई लोगों को नौकरियों से हाथ धोना पड़ेगा.

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार कोरोना वायरस की वजह से दुनिया भर में आर्थिक गतिविधियां ठप हो गई हैं और इसकी वजह से दुनिया में वर्ष 1930 की महामंदी के बाद सबसे बड़ी मंदी आ रही है. आईएमएफ ने कहा है भारत की आर्थिक विकास दर वर्ष 2020 में 2 फीसदी से भी कम 1.9 फीसदी रहेगी, वहीं चीन में यह दर लगभग 1.2 फीसदी रहेगी और अमेरिका सहित अधिकतर देशों की अर्थव्यवस्था बढ़ने की बजाय संकुचित हो जाएगी.

आईएमएफ की मुख्य अर्थशास्त्री गीता गोपीनाथ ने कहा, 'हम वैश्विक उत्पादन में -3 फीसदी तक की गिरावट का अनुमान लगा रहे हैं. यह मंदी विश्व की अर्थव्यवस्था से 9 ट्रिलियन डॉलर की कमी कर देगी. कोरोना-19 महामारी का सभी क्षेत्रों में बुरा असर होगा. वर्ष 1929-30 की महामंदी दुनिया की सबसे खराब आर्थिक मंदी थी, जो वर्ष 1929 में शुरू हुई जिसका उद्गम क्षेत्र अमरीका था और एक दशक तक इसका प्रभाव रहा. कोरोना का संकट बहुत ही भयावह है. लोगों के जीवन और उनकी आजीविका पर इसके असर को लेकर बहुत अनिश्चितता है. उन्होंने यह भी कहा कि अर्थव्यवस्था की स्थिति वायरस के इलाज और इसके नियंत्रण पर निर्भर करती है जिसका अनुमान लगाना अभी कठिन है. उन्होंने कहा कि कई देश अभी स्वास्थ्य और आर्थिक नुकसान सहित कई तरह की समस्याओं का सामना कर रहे हैं.

लेकिन आईएमएफ ने वर्ष 2021 को लेकर बेहतर स्थिति का आकलन किया है. तब दुनिया की अर्थव्यवस्था 5.8 फीसदी की गति से बढ़ने का अनुमान है. 2021 में भारत 7.4 फीसदी की गति से बढ़ सकता है तो चीन 9.2 फीसदी की गति हासिल कर सकता है. अमेरिका 4.5 फीसदी और जापान 3 फीसदी की गति हासिल कर सकता है.

बढ़ने की बजाय सिकुड़ जाएंगी बड़ी अर्थव्यवस्थाएं

देश	सकल घरेलू उत्पाद अनुमान वर्ष 2020	सकल घरेलू उत्पाद अनुमान वर्ष 2021
अमेरिका	-5.9%	4.7%
जापान	-5.2%	3.0%
ब्रिटेन	-6.5%	4.0%
जर्मनी	-7.0%	5.2%
फ्रांस	-7.2%	4.5%
इटली	-9.1%	4.8%
रूस	-5.5%	3.5%
ब्राजील	-5.3%	2.9%
स्पेन	-8.0%	4.3%

स्रोत: आई एम एफ

विश्व के ज्यादातर देशों में लॉकडाउन में लगभग सभी क्षेत्र के अधिकतर कर्मचारियों को वेतन कटौती का सामना करना पड़ रहा है. यह सभी के लिए एक कठिन समय है और परिस्थितियां हमारे नियंत्रण से बाहर हैं. वेतन में कटौती से निश्चित तौर पर हममें से बहुतों का जीवन बहुत प्रभावित होता है. वेतन कटौती पर अधिक तनाव लिए बिना हमें कुछ ऐसे फैसले लेने चाहिए जिससे हम आसानी से इस दौर से बाहर निकल सकें.

कोरोना वायरस महामारी का असर आईटी सेक्टर पर भी पड़ रहा है. भारतीय उद्यमियों और आईटी पेशेवरों के केंद्र सिलिकॉन वैली खुद को कोरोना वायरस महामारी के बाद की स्थितियों के लिए तैयार कर रहा है, जिसमें छंटनी, वेतन में कटौती और नई भर्तियों पर रोक शामिल हैं.

शीर्ष वेंचर निवेशक एम रंगास्वामी ने बताया कि गूगल और फेसबुक जैसी बड़ी आईटी कंपनियों का दृष्टिकोण अलग हो सकता है, लेकिन कई स्टार्टअप या तो छंटनी करने की या वेतन में कटौती की तैयारी कर रहे हैं.

सिलिकॉन वैली खुद स्टार्टअप को छंटनी के लिए प्रेरित कर रही है. इससे पांच प्रतिशत कर्मचारियों की संख्या प्रभावित हो सकती है या 10 प्रतिशत कार्यबल की छंटनी हो सकती है. लोगों के वेतन में 10 प्रतिशत की कटौती हो सकती है.

कोरोना वायरस के चलते पूरे विश्व में आवश्यक सेवाओं के अलावा सभी सेवाएं बंद कर दी गई हैं. कारोबार थम गया है, दुकानें बंद हैं, आवाजाही पर रोक है. पहले से मुश्किलें झेल रही आर्थिक अर्थव्यवस्था के लिए कोरोना वायरस का हमला एक बड़ी मुसीबत लेकर आया है. पिछले साल की ही बात करें तो ऑटोमोबाइल सेक्टर, रियल इस्टेट, लघु उद्योग समेत असंगठित क्षेत्र में सुस्ती छाई हुई थी. बैंक एनपीए की समस्या से अब तक निपट रहे हैं. सरकार निवेश के ज़रिए, नियमों में राहत और आर्थिक मदद देकर अर्थव्यवस्था को रफ़्तार देने की कोशिश कर रही थी.

अगर समय पर कोरोना वायरस की वैक्सीन का आविष्कार नहीं हुआ तो इसका पूरे विश्व की आर्थिक व्यवस्था पर बहुत बुरा असर पड़ेगा और इससे हुए नुकसान की दुबारा भरपाई में भी बहुत समय लगेगा. पर जिस तरह मानव जाति ने हर मुसीबत का सामना डट कर किया है उसी भांति कोरोना के विरुद्ध युद्ध में भी मानव की ही विजय होगी. वो कहते हैं ना कि 'समुद्र की लहरें कितनी भी उग्र या बलवान क्यों ना हो, किनारों से टकरा कर लौट ही जाती हैं.' उसी प्रकार कोरोना की इस दलदल से हमारी अर्थव्यवस्था अवश्य निकल पाएगी. ❑❑❑

– रचना मिश्रा
सहायक महाप्रबन्धक एवं शिक्षण प्रमुख,
बड़ौदा अकादमी, नई दिल्ली

समय से ऋण वसूली के लाभ

भारत की अर्थव्यवस्था में बैंकों का योगदान महत्वपूर्ण है. बैंक लोगों का पैसा सुरक्षित रखने में मदद करते हैं. इसके अतिरिक्त बैंक ऋण सुविधाएं प्रदान कर देशवासियों को सक्षम और देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाते हैं. पिछले कुछ सालों में अर्थव्यवस्था में मंदी और अन्य कारणों से बैंक में एनपीए का स्तर बढ़ा है.

अनर्जक आस्ति (एनपीए) का मतलब बैंक द्वारा दिये गये ऋण की अदायगी सही समय पर नहीं होने से है. ऋणियों द्वारा ऋण नहीं चुकाए जाने के कई कारण हैं. परंतु एनपीए स्तर का बढ़ना न तो ग्राहक के लिए लाभकारी है न ही बैंक और देश की अर्थव्यवस्था के लिए.

एनपीए से बैंक को क्या नुकसान है?

- बैंक से लिया हुआ ऋण यदि वापस नहीं किया जाता है तो बैंक की तरलता स्थिति पर असर पड़ता है.
- ऋण का ब्याज और अन्य प्रभार नहीं मिलने से बैंक के मुनाफे पर असर पड़ता है.
- एनपीए ऋण पर बैंक को प्रोविजनिंग करनी पड़ती है जो कि 15% से ले कर 100% तक होती है.
- बैंक के ऋण पोर्टफोलियो गुणवत्ता पर असर पड़ता है. इसका असर बैंक के ब्रांड पर और शेयर बाज़ार पर भी पड़ता है.
- बैंक का दिया हुआ पैसा वापस नहीं मिलने से बाकी ग्राहकों को ऋण देने के लिए बैंक के पास पैसा नहीं बचता है.
- एनपीए की वजह से जमा लागत अधिक हो जाती है. इसलिए बैंक ऋण में ब्याज दर घटा नहीं पाते हैं. बैंक जमा पर ज्यादा ब्याज नहीं दे पाते हैं. अन्य बैंक के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए बैंक ऋण की ब्याज दर कम करते हैं और जमा दर पर ब्याज बढ़ाते हैं. इसका बैंक के निवल ब्याज मार्जिन पर (एनआईएम) पर असर पड़ता है.
- बासेल नियम के अनुसार जितना ऋण (Risk Weighted Asset) देते हैं बैंक को उसके अनुसार पूंजी रखनी पड़ती है. ऋण एनपीए होने का बाद बैंक को एनपीए ऋण के एवज़ में ज्यादा पूंजी रखनी पड़ती है.
- एनपीए की वजह से बैंक का लाभ घट जाता है. इसलिए बैंक शेयरधारकों को लाभांश नहीं दे पाता है. जिसके कारण शेयरधारक बैंक में पूंजी नहीं लगाते हैं.

एनपीए से ग्राहक को नुकसान

- बैंक का किस्त सही समय पर नहीं चुकाने से ग्राहक को ब्याज दंड लगता है जो की 2% से लेकर 5% तक होता है.
- ऋण बकाया होने पर सिबिल स्कोर घट जाता है. बाद में बैंक ऋण देने से पहले सभी बैंकों में सिबिल स्कोर चेक करते हैं. ऋण किस्त की चुकौती में चूक होने पर बाकी बैंक भी ऋण नहीं देते हैं.

एनपीए से देश को क्या नुकसान है?

- बैंक का दिया हुआ ऋण अगर सही काम में लगता है तो उससे रोजगार का जरिया मिलता है. बैंक का एनपीए बढ़ने और जरूरतमंद उद्योग को ऋण नहीं मिल पाने से उद्योग प्रभावित होते हैं और व्यापार पर विपरित प्रभाव पड़ता है. इसका सीधा असर रोजगार पर पड़ता है और अंततः इससे राष्ट्र की प्रगति भी प्रभावित होती है.
- पैसा जितना जल्दी एक हाथ से दूसरे के हाथ में जाता है उतना ही निवेश का रास्ता खुलता है. अगर यही बैंक का दिया हुआ पैसा कोई नहीं लौटाता है तो मुद्रा का गतिमान चक्र एक जगह रूक जाता है. इससे देश की अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है.

एनपीए संकट कितना बड़ा है?

भारतीय रिज़र्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार मार्च 2019 में राष्ट्रीयकृत बैंकों में कुल रू. 739541 करोड़ जो कुल ऋण का 11.59% और निजी बैंकों में कुल रू. 183604 करोड़ रुपया जो कुल ऋण का 5.25% एनपीए है, जो मार्च 2005 में राष्ट्रीयकृत बैंकों में कुल रू. 32782.90 करोड़ जो कुल ऋण का 5.34% और निजी बैंकों में कुल रू. 8782 करोड़ रूपया था जो कुल ऋण का 3.83% है.

बैंक	सकल एनपीए (रू. करोड़ में)	
	31-03-2005 तक	31-03-2019 तक
इलाहाबाद बैंक	1284.27	28704.78
आंध्रा बैंक	440.93	28973.97
बैंक ऑफ़ बड़ौदा	3321.81	48232.76
बैंक ऑफ़ इंडिया	3155.91	60661.12
बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र	961.94	15324.49
केनरा बैंक	2370.55	39224.12
सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया	2621.00	32356.04
कॉर्पोरेशन बैंक	647.25	20723.68
देना बैंक	1147.54	12767.94
इंडियन बैंक	1215.89	13353.45
इंडियन ओवरसीज़ बैंक	748.35	33398.12
ओरियंटल बैंक ऑफ़ कॉमर्स	1388.15	21717.07
पंजाब एंड सिंध बैंक	2492.27	8605.87
पंजाब नैशनल बैंक	1197.41	78472.70
स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया	3741.34	172750.36
सिंडिकेट बैंक	1432.78	24680.37
यूको बैंक	1399.35	29888.33
यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया	2058.15	48729.15
यूनाइटेड बैंक ऑफ़ इंडिया	726.37	12053.38
विजया बैंक	431.64	8923.30
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	32782.90	739541.00

एनपीए कम करने के उपाय :

1) वसूली के नॉन लीगल उपाय :

ग्राहक की निरंतर निगरानी करना

बैंक द्वारा ऋण देने से पहले और ऋण देने के बाद ग्राहक से नियमित संवाद होना चाहिए. यदि बैंक को ग्राहक की समस्या पहले पता चल जाती है तो उसका इलाज़ हो सकता है ताकि ऋण एनपीए न हो और ग्राहक के कामकाज पर भी असर न पड़े.

लोन शिड्यूलिंग

कई बार कई कारणों से जैसे प्रकृतिक आपदा के कारण काम चालू करने में या फ़ैक्ट्री चालू करने में ज्यादा समय लगता है. उसके कारण ग्राहक सही समय पर ऋण चुका नहीं पाते हैं. बैंक ग्राहकों की वास्तविक कठिनाई को देखते हुए ऋण चुकाने की अवधि या ऋण इएमआई या दोनों मे बदलाव करता है.

बैंक को लाभ

- ऋण के एनपीए नहीं होने से कम प्रावधान करना पड़ता है. इसके फलस्वरूप बैंक की लिक्विडिटी बरकरार रहती है.
- बैंक का बैलेन्स शीट साफ सुथरा रहता है. इसके फलस्वरूप हितधारकों के बीच बैंक की इमेज अच्छी रहती है.

ग्राहक को लाभ

- ऋण चुकाने के लिए समय मिलता है. ग्राहक निश्चिंत हो कर कारोबार या अपने काम में ध्यान दे सकते हैं.
- ऋण एनपीए नहीं होने से ग्राहक का क्रेडिट रिपोर्ट खराब नहीं होता है. उसको ये भविष्य में ऋण मिलने में मदद करता है.

कॉम्प्रोमाइज़ सेटेलमेंट:

कॉम्प्रोमाइज़ सेटेलमेंट ग्राहक और बैंक के बीच एक समझौता है जो कि पुराने एनपीए ऋण को कम करने में बैंक की मदद करता है. बैंक या ग्राहक कोई भी इसकी पहल कर सकता है. जब प्रकृतिक आपदा, व्यवसाय या फैक्ट्री बंद होने या खेती खराब होने, पशुपालन या मुर्गी पालन में नुकसान अथवा अन्य कारणों से ऋणी ऋण चुकाने में असफल होते हैं, ऐसी कई विशेष परिस्थितियों में कॉम्प्रोमाइज़ सेटेलमेंट की स्थिति आती है. कॉम्प्रोमाइज़ सेटेलमेंट करने से पहले बैंक निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखता है:

- कुल संविदागत बकाया
- नेट बुक ड्यूज
- अलग से रखी गई मार्जिन राशि और वसूली राशि
- उपलब्ध प्रतिभूतियां और इसकी वसूलीयोग्य राशि
- निवल उपलब्ध मूल्य
- नुकसान की राशि

बैंक को लाभ :

- बैंक का पैसा जो बहुत दिनों से अटका पड़ा था वो बैंक को मिल जाता है. यही पैसा फिर दूसरे ग्राहकों को दिया जा सकता है.
- एनपीए के लिए बैंक द्वारा किया गया प्रोविजन कम होता है. जिसकी के वजह से बैंक का मुनाफा बढ़ता है.
- एनपीए कम होने से बैंक के ऊपर हितधारकों का भरोसा कायम रहता है.

ग्राहक को लाभ :

- लोन की भरपाई आसानी से होने से उसका वित्तीय बोझ कम होता है. ग्राहक को नया व्यापार करने लिए या खेती के लिए ऋण सुविधा दी जा सकती है.
- ब्याज या मूल रकम पर छूट मिलने से ग्राहक को लाभ पहुंचता है और उसे आगे बढ़ सकने में मदद मिलती है.

2) वसूली हेतु कानूनी उपाय/लोक अदालत

लोक अदालत की व्यवस्था बिना कोर्ट के चक्कर काटे ही बैंक की बकाया राशि की वापसी का एक सरल उपाय है. लीगल सर्विसेज ऑथेरिटी एक्ट 1987 के तहत सभी राज्यों में उच्च न्यायालय, जिला स्तर पर और तालुका स्तर पर इस समिति का गठन किया गया है. इसमें 20 लाख तक के ऋणों का निपटारा हो सकता है.

बैंक को फायदा :

- लोक अदालत में लिया गया निर्णय सिविल कोर्ट की डिक्री के बराबर होता है. इसलिए दोनों पक्ष इसको मानने के लिए बाध्य होते हैं.
- लोक अदालत के निर्णय के खिलाफ अपील नहीं हो सकती क्योंकि ये दोनों पक्षों के आपसी समझौता से होता है.

ग्राहक को फायदा :

- इसमें ग्राहक को कोई कोर्ट फीस नहीं देनी पड़ती है.
- इसमें ग्राहक सेटलमेंट करने के लिए बाध्य नहीं होते हैं और उनके लिए बिना दबाव के समझौता करना सरल होता है.

ऋण वसूली न्यायाधिकरण (डीआरटी)

द रिकवरी ऑफ़ डेट ड्यू टू बैंक्स एंड फायनांशियल इंस्टीट्यूशन एक्ट, 1993 के तहत हर राज्य में डीआरटी का गठन किया गया है. आज देश में कुल 39 डीआरटी और 5 डीआरएटी काम कर रहे हैं.

ये बैंक के ऋण संबन्धित केस का जल्दी निपटारा के लिए काम करते हैं ताकि बैंक और ग्राहक दोनों को जल्द से जल्द न्याय मिले और वसूली जल्द हो सके. ऋण की रकम रू. 20 लाख या उसे अधिक होने पर ही बैंक डीआरटी में जा सकता है.

सिक्यूरिटाइजेशन एक्ट 2002:

सिक्यूरिटाइजेशन एंड रिकंस्ट्रकशन ऑफ फायनेंशियल एसेट्स एंड इन्फोर्समेंट ऑफ सिक्यूरिटी इंट्रेस्ट एक्ट, 2002 के तहत बैंक लोन की रिकवरी के लिए जो गिरवी संपत्तियां हैं उनको बिना कोर्ट के हस्तक्षेप के जब्त करके नीलाम कर सकता है. बैंक एनपीए यूनिट का प्रबंध अपने हाथ में ले के पैसा वसूली कर सकता है. खेती की जमीन, हवाई जहाज, पोत ये एक्ट के अन्दर नहीं आते हैं.

इस एक्ट में ग्राहक को सेक्शन 13(2) में बैंक 60 दिनों का नोटिस देता है. अगर ग्राहक उसमें कुछ लिखित आपत्ति जताता है तो उसका जबाब 15 दिन के अंदर देना चाहिए.

यदि ग्राहक सेक्शन 13(2) में दी गई रकम नहीं चुकाता है तो बैंक सेक्शन 13(4) में फिर नोटिस दे के प्रॉपर्टी को अपने कब्जे में ले सकता है.

द इंसोलवेंसी एंड बैंक्रप्सी कोड, 2016 (आईबीसी)

- यदि कोई कंपनी कर्ज़ वापस नहीं चुकाती है तो आईबीसी के तहत कर्ज़ वसूलने के लिये उस कंपनी को दिवालिया घोषित कर दिया जाता है.
- इसके लिए एनसीएलटी की विशेष टीम कंपनी से बात करती है और कंपनी के मैनेजमेंट के राजी होने पर कंपनी को दिवालिया घोषित कर दिया जाता है.
- इसके बाद उसकी पूरी संपत्ति पर बैंक का कब्ज़ा हो जाता है और बैंक उस संपत्ति को किसी अन्य कंपनी को बेचकर अपना कर्ज़ वसूल सकता है.
- आईबीसी में बाज़ार आधारित और समय-सीमा के तहत इन्सॉल्वेंसी समाधान प्रक्रिया का प्रावधान है.
- आईबीसी की धारा 29 में यह प्रावधान किया गया है कि कोई तीसरा पक्ष ही कंपनी को खरीद सकता है.
- आईबीसी के हिसाब से, यदि 75 प्रतिशत कर्ज़दाता सहमत हों तो ऐसी किसी कंपनी जो अपना कर्ज़ नहीं चुका पा रही है उस पर 180 दिनों (90 दिन के अतिरिक्त रियायती काल के साथ) के भीतर कार्रवाई की जा सकती है.
- कर्ज़ न चुका पाने की स्थिति में कंपनी को अवसर दिया जाता है कि वह एक निश्चित समयावधि में कर्ज़ चुकता कर दे या स्वयं को दिवालिया घोषित करे.

ऐसा नहीं है की बैंक केवल अपने पैसे की वसूली पर ही ध्यान देते है. बैंक ग्राहक की ज़रूरतों या तकलीफों को देखते हुए भी उनकी मदद करते हैं, ताकि ग्राहक बैंक का पैसा चुकाए.

हाल ही में कोरोना महामारी के कारण सारे देश में लॉकडाउन होने से सभी व्यवसाय ठप हैं. इस स्थिति में बैंक ने आगे आकर ग्राहकों को मदद करने का हाथ बढ़ाया है. ग्राहकों के लिए आरबीआई के दिशानिर्देशों पर कई कदम उठाए गए हैं.

- सभी लोन की ईएमआई तीन महीने के लिए टाल दी गई है.
- छोटे और मझौले उद्यगों के लिए जरूरी वित्तीय सहायता भी पहुंचाई जा रही है.

इस प्रकार हम देखते हैं कि बैंक के लिए ऋण प्रदान करना और समय पर इसकी वसूली कितना जरूरी है. धन के चक्र का गतिशील होने से बैंको में एनपीए स्तर कम होता है जो कि बैंकों के साथ-साथ ग्राहकों के लिए भी अच्छा है और अंततः यह देश की अर्थव्यवस्था की सेहत के लिए बहुत जरूरी है. ❑❑❑

– त्रिलोचन साहू
शिक्षण प्रमुख
बड़ौदा अकादमी, बड़ौदा

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया

'विश्व फ़लक पर हिन्दी के बढ़ते कदम' विषय पर संगोष्ठी आयोजित

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में विश्व हिन्दी दिवस का भव्य आयोजन किया गया. दिनांक 10 जनवरी 2020 को आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री शांति लाल जैन ने की. इस अवसर पर बैंक में 'विश्व फ़लक पर हिन्दी के बढ़ते कदम' विषय पर एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी और प्रख्यात लेखक, कवि तथा समाज-सेवी श्री क़ैसर ख़ालिद, पुलिस महानिरीक्षक, महाराष्ट्र पुलिस रहे. इस अवसर पर पुलिस आयुक्त, बड़ौदा श्री अनुपम सिंह गहलोत भी उपस्थित रहे.

कार्यक्रम का शुभारंभ बैंक के महाप्रबंधक (परिचालन एवं सेवाएं) श्री के आर कनोजिया के स्वागत वक्तव्य के साथ हुआ. इस अवसर पर नगर के पुलिस आयुक्त श्री अनुपम सिंह गहलोत ने कहा कि हिन्दी अपनी विशेषता के कारण विश्व में अपना प्रसार बढ़ाने में सफल रही है. भारत में गैर-हिन्दीभाषी प्रदेशों में भी हिन्दी ने अपनी पकड़ को मजबूत किया है. बैंक के कार्यपालक निदेशक ने सभी को विश्व हिन्दी दिवस की शुभकामनाएं दीं. उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि ''हिन्दी केवल भाषा ही नहीं है बल्कि यह समाज में लोगों को साक्षर और जागरूक करने का एक प्रभावी माध्यम है. हम सभी हिन्दी के माध्यम से ही आपस में मजबूती से जुड़े हैं. यह बैंक के व्यवसाय विकास में भी सहयोगी है.''

समारोह में उपस्थित मुख्य अतिथि श्री क़ैसर ख़ालिद ने कहा कि ''भाषा अपने देश की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है. अच्छी भाषा वही है जिसमें लोग अपने भाव सहजता से व्यक्त कर पाएं. हिन्दी अपनी स्वीकार्यता के कारण ही अपनी स्थिति बेहतर कर सकी है. आज विज्ञापन और बाज़ार के एक बड़े वर्ग की भाषा हिन्दी है. परंतु कालांतर में इसका विस्तार तभी हो सकता है जब हम इसे अपने घरों में सहज रूप से बोलचाल में लाएंगे. हमें आने वाली पीढ़ी को विरासत के रूप में यह भाषा देनी होगी. ऐसी व्यवस्थाएं करनी होंगी ताकि समाज में इसकी जरूरत बरकरार रहे. उन्होंने विश्व में हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता को भी गहराई से रेखांकित किया तथा इस अवसर पर उन्होंने अपनी रचनाएं भी प्रस्तुत की.''

कार्यक्रम में बैंक के महाप्रबंधक (मुख्य समन्वयन) द्वय श्री बी आर पटेल एवं श्री रोहित पटेल सहित अन्य कार्यपालकगण भी उपस्थित रहे. कार्यक्रम का संचालन सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री पुनीत कुमार मिश्र ने किया और आभार प्रदर्शन प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री रोशन शर्मा ने किया.

प्रस्तुतिः अम्ब्रेश रंजन कुमार

राजभाषा अधिकारियों के लिए एक दिवसीय अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 05 मार्च 2020 को बेंगलूरु नगर स्थित चारों नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (केंद्र सरकार कार्यालय-1. केंद्र सरकार कार्यालय-2, बैंक तथा उपक्रम) के संयुक्त तत्वावधान में राजभाषा अधिकारियों के लिए एक दिवसीय अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के विभागध्यक्ष डॉ. सी जयशंकर बाबू तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन, नगर राजभाषा कार्यान्वय समिति (बैंक) बेंगलूरु के अध्यक्ष एवं बैंक के महाप्रबंधक - मुख्य समन्वयन - दक्षिण श्री वीरेंद्र कुमार उपस्थित रहे.

नवजागरण की भूमि... पश्चिम बंगाल

जोदी तोर डाक सुने केउ न आसे तोबे एकला चोलो रे
एकला चोलो, एकला चोलो, एकला चोलो, एकला चोलो रे.

भारतीय जनमानस के जेहन में बसी कविगुरु रबीन्द्र नाथ ठाकुर की उपर्युक्त पंक्तियां आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी कि उस समय, जब इसकी रचना की गई थी. जीवन तमाम बाधाओं को दरकिनार करते हुए आगे बढ़ने का नाम है. उक्त पंक्तियां हमें सभी तरह की विपरीत परिस्थितियों में भी निरंतर आगे बढ़ने का संदेश और प्रेरणा देती हैं. तमाम महान व्यक्तित्व और समाज सुधारकों की धरती पश्चिम बंगाल भारत के पूर्वी छोर पर स्थित है.

यह भारत की चौथी सबसे घनी आबादी वाला एक कृषि प्रधान राज्य है. पूरब दिशा में बांग्लादेश और उत्तर में नेपाल एवं भूटान जैसे पड़ोसी देशों से इसकी सीमाएं लगती हैं. साथ ही इसकी सीमाएं ओडिसा, झारखंड, बिहार, सिक्किम और असम राज्यों को छूती हैं. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश के विभाजन के साथ बंगाल को पूर्वी बंगाल और पश्चिम बंगाल में विभाजित कर दिया गया. पूर्वी बंगाल आज बंगलादेश के नाम से एक अलग देश है. कोलकाता महानगर पश्चिम बंगाल की राजधानी है. कोलकाता वर्ष 1772 से 1911 तक ब्रिटिश भारत की राजधानी रहा. इसे अब भी भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में जाना जाता है. यहां की सड़कों में घूमते-घूमते आज भी आपको ब्रिटिश भारत की झलकियाँ यदा-कदा दिख जाएंगी.

पुराने समय में पश्चिम बंगाल पर कई राजवंशों ने शासन किया. बाद में यह मुगलों के शासन के अधीन रहा और अंत में ब्रिटिश शासकों ने इसे अपना प्रमुख केंद्र बनाया. यह स्वतन्त्रता सेनानियों, समाज सुधारकों, साहित्यकारों, संतों और वीर पुरूषों की भूमि रही है. इसी भूमि पर स्वामी विवेकानंद ने अध्यात्म की साधना की. यहीं पर कविगुरु रबीन्द्रनाथ टैगोर ने बांग्ला साहित्य को नया रूप प्रदान किया. सुभाषचंद्र बोस ने इसे ही अपनी कार्यस्थली बनाई जहां से उन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अंग्रेजों से लोहा लेने की योजना बनाई.

इसी धरती पर राजा राममोहन राय ने देश के नवजागरण की नींव रखी. उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के शुरुआती वर्षों में बंगाल में हुए समाज सुधार आंदोलनों, देशभक्त-राष्ट्रवादी चेतना के उत्थान और साहित्य-कला-संस्कृति में हुई प्रगति के दौर को संपूर्ण भारतवर्ष में नवजागरण की संज्ञा दी जाती है. इस दौरान समाज सुधारकों, साहित्यकारों और कलाकारों ने विवाह, दहेज, जातिप्रथा, सतीप्रथा और धर्म संबंधी स्थापित कुरीतियों को चुनौती दी. बंगाल के इस घटनाक्रम ने समग्र भारत पर अमिट छाप छोड़ी. इसी नवजागरण के दौरान भारतीय राष्ट्रवाद का शुरुआती रूप परिलक्षित हुआ.

जिस तरह पश्चिम बंगाल का अतीत इसकी भूमि पर जन्में महान विभूतियों के कारण सुंदर और आकर्षक है, उसी तरह यहां की प्राकृतिक सुंदरता और विविधता आपका मन मोह लेगी. इसके उत्तर में दार्जिलिंग-हिमालय की पहाड़ियों की श्रृंखला है, तो दक्षिण में बंगाल की खाड़ी है. यहां समतल भूमि से लेकर

सुंदरवन जैसा घना जंगल है. गंगा, हुगली नदी के नाम से बहती हुई यहां की धरा को पावन करती है. राज्य के दक्षिणी छोर पर गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियां मिलकर दुनिया का सबसे बड़ा डेल्टा बनाती है जिसका एक बड़ा भाग बांग्लादेश में है. ऐसी भौगोलिक विविधता देश के किसी और राज्य में देखने को नहीं मिलती है.

भाषाओं और प्राकृतिक विविधता के कारण यहां के निवासियों के खान–पान, पहनावे, रीति रिवाजों एवं परंपराओं आदि में निहित विविधता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है.

यहां की संस्कृति भारत की सबसे समृद्ध संस्कृतियों में से एक है. यहां की बहुसंख्यक आबादी बंगाली हिन्दू है. बांग्ला यहाँ की प्रमुख भाषा है जो अपने आप में यहां की संस्कृति को समेटे हुए है. साथ ही, यहां हिन्दी, नेपाली, उर्दू और अंग्रेजी आदि भाषाओं सहित बहुत–सी बोलियां बोली जाती हैं. यहां के रीति–रिवाजों, परंपराओं, उत्सव–त्यौहारों, धर्मों और विचारधाराओं के कारण इस राज्य की संस्कृति अत्यंत वैविध्यपूर्ण है जिसे हम निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं:–

साहित्य–साधना

इसकी संस्कृति को समृद्ध बनाने में बांग्ला भाषा और लोक साहित्य का अहम योगदान रहा है. यहां के कवियों, उपन्यासकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से जहां एक ओर समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई, वहीं दूसरी ओर देशवासियों में राष्ट्रवाद की अलख जगाने का भी प्रयास किया. उपन्यासकार एवं कवि बंकिम चंद्र चटोपाध्याय ने राष्ट्रगीत वंदे मातरम की रचना कर स्वतंत्रता सेनानियों के सामने भारत को माता के रूप में प्रस्तुत किया और आज भी हम अपने देश को भारत माता कहकर पुकारते हैं. जगत प्रसिद्ध कविगुरु रबीन्द्र नाथ टैगोर एशिया के पहले व्यक्ति थे जिन्हें उनकी रचना गीतांजली के लिए साहित्य के नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया. उन्होंने बांग्ला साहित्य और संगीत को नया रूप प्रदान किया. बंगाली परिवारों में आज भी रवीन्द्र संगीत का खास स्थान है. हमारा राष्ट्रगान जन–गण–मन उन्हीं की देन है. कालजयी लेखिका महाश्वेता देवी ने इसी भूमि पर अपनी रचनाधर्मिता को नया आयाम दिया. उन्होंने *अग्निगर्भ, हजार चुरासीर माँ, जंगल के दावेदार* जैसी रचनाओं से खूब प्रसिद्धि पायी. काज़ी नज़रुल इस्लाम और शरत चंद्र चटोपाध्याय जैसे साहित्यकारों ने यहां की साहित्यिक भूमि को समृद्ध बनाया.

धर्म और आस्था

जिस तरह हमारे देश में विभिन्न धर्मों के लोग मिलजुल कर साथ रहते हैं, उसी तरह पश्चिम बंगाल में भी अलग–अलग धर्मों पर आस्था रखने वाले लोग मिलजुल कर रहते हैं. यहां प्रमुख रूप से हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध, जैन, ईसाई और सिक्ख धर्मों के लोग बसते हैं. बौद्धों की अधिकतर आबादी दार्जिलिंग और पहाड़ी इलाकों में बसती है. साथ ही, कई और धर्मों के लोग भी यहां निवास करते हैं.

संगीत और नृत्यशैली

संगीत साधना यहां की परंपरा में शामिल है. बंगाली परिवारों में बच्चों को बहुत ही कम उम्र से संगीत की शिक्षा दी जाती है. गीत–संगीत और नृत्य यहां की परंपरा का हिस्सा हैं. यहां कई प्रकार के लोक–संगीत एवं नृत्य प्रसिद्ध हैं. श्यामा संगीत एकतारा वाद्य यंत्र पर गाया जानेवाला एक भक्ति संगीत है जिसे माँ काली की भक्ति स्वरूप गाया जाता है. भगवान कृष्ण की भक्ति में गाया जाने वाला कीर्तन बंगाल के मंदिरों और गांव–देहात की गलियों में गूंजता है. भक्ति संगीत के अलावा रबीन्द्र संगीत, नज़रुल गीति ने भी बंगाली संगीत को नई ऊंचाइयाँ प्रदान की हैं. शांतिनिकेतन की बाउल लोक–नृत्य शैली और पुरुलिया की छौ लोक–नृत्य शैली वे प्रसिद्ध नृत्य शैलियाँ हैं जिन्हें देखने के लिए लोग दूर–दूर से आते हैं. यहां का संगीत और नृत्य शैलियां लोगों को ईश्वर भक्ति और प्रकृति के करीब लाती हैं.

पर्व–त्यौहार और शक्ति पूजा

राज्य का सबसे बड़ा और सबसे प्रसिद्ध त्यौहार है दुर्गा पूजा. इसे पूरे राज्य में बहुत ही उत्साह के साथ और बड़े पैमाने पर मनाया जाता है. विभिन्न शहरों से लेकर छोटे–छोटे गांवों तक में सुंदर पंडाल बनाए जाते हैं. ये पंडाल सिद्धहस्त कारीगरों द्वारा अलग–अलग शैलियों, रूपों और आकारों में बनाए जाते हैं. लोगों के उत्साह का अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि दुर्गा पूजा के नौवें (नवमी) और दसवें (विजय दशमी) दिन पंडालों में पैर रखने की भी जगह नहीं होती है. दुर्गा पूजा के अलावा कृष्ण जन्माष्टमी, होली, दीपावली, मकर संक्रांति, रथ यात्रा, गणेश चतुर्थी, सरस्वती पूजा, लक्ष्मी पूजा, बुद्ध पुर्णिमा, क्रिसमस, ईद,

मुहर्रम आदि त्यौहार मुख्य रूप से और बड़े उत्साह के साथ मनाए जाते हैं. शांतिनिकेतन में प्रति वर्ष शीतकाल में आयोजित पौष मेले के दौरान बाउल नृत्य और संगीत का आयोजन किया जाता है. मकर संक्रांति के समय हिंदुओं के तीर्थ गंगा सागर में आयोजित मेले में बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग लेते हैं. राज्य में लगभग पूरे वर्ष उत्सव, मेले और त्यौहारों का तांता लगा रहता है जिसके कारण लोग अध्यात्म और समाज से जुड़ा महसूस करते हैं.

माछ–भात और चाय की चुस्की

माछ–भात अर्थात् मछली और चावल यहां के निवासियों का प्रमुख भोजन है. अलग–अलग प्रकार की मछलियों को अलग–अलग प्रकार से पकाना यहां के निवासियों की विशेषता रही है. यहां हिल्सा, रुई, कातला आदि मछलियों का सेवन प्रमुख रूप से किया जाता है. विभिन्न प्रकार की मिठाइयों भी जन–जीवन का अहम हिस्सा हैं. किसी भी त्यौहार के समय यहां की दुकानें रसगुल्ले, विभिन्न प्रकार के संदेश, काला जाम और न जाने कितनी तरह की रंग–बिरंगी और स्वादिष्ट मिठाइयों से सज जाती हैं. यहां के लोगों को मिठाई खाना और खिलाना काफी पसंद है. इसी तरह दार्जिलिंग जैसे पहाड़ी इलाकों में लोग गरमा–गरम मोमो, नूडल्स, आलू मिमी और सूप जैसे व्यंजनों का सेवन करते हैं. दार्जिलिंग का नाम लेकर यहां की चाय को कैसे भूल सकते हैं. यहां के चाय बागानों से पूरे भारत में चाय की आपूर्ति होती है. पहाड़ों की ठंड से बचने के लिए मैदानी इलाकों की तुलना में यहां के खान–पान में काफी विविधता पायी जाती है. मौसम के कारण लोगों ने अपनी खाने–पीने की आदत बदली है.

समाज सुधारकों और भक्तों की भूमि

पश्चिम बंगाल के समाज सुधारकों ने अंधविश्वासों, कुरीतियों को सामाजिक जीवन से दूर करने और यहां की संस्कृति को पुष्ट करने में अहम योगदान दिया और आधुनिक बंगाल की नींव रखी. इन समाज सुधारकों में रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, राजा राममोहन राय (बंगाल के नवजागरण के जनक), ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे महान व्यक्तियों के नाम उल्लेखनीय हैं. उन्होंने सती प्रथा, दहेज प्रथा, जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता आदि जैसी कुरीतियों से समाज को छुटकारा दिलाने के लिए अथक प्रयास किए. उन्होंने न केवल बंगाल बल्कि पूरे भारत को विश्वमंच पर स्थापित किया. स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में अपने संबोधन से अमेरिका सहित पूरी दुनिया में भारत का डंका बजाया. उन्होंने रामकृष्ण परमहंस मिशन की स्थापना की जो आज भी कार्यरत

है. आधुनिक बंगाल की कथा इन महान व्यक्तियों के बिना अधूरी है. उन्नीसवीं सदी में और बीसवीं सदी के शुरुआती वर्षों में बंगाल में हुए समाज–सुधार आंदोलनों, देशभक्त–राष्ट्रवादी चेतना के उत्थान और साहित्य–कला–संस्कृति में हुई प्रगति के दौर को देश के नवजागरण की संज्ञा दी जाती है. इस दौरान समाज सुधारकों, साहित्यकारों और कलाकारों ने स्त्री सम्मान पर जोर दिया और विवाह, दहेज, जाति प्रथा, सती प्रथा और धर्म संबंधी स्थापित कुरीतियों को चुनौती दी. बंगाल के इस घटनाक्रम ने समग्र भारत पर अमिट छाप छोड़ी. इसी नवजागरण के दौरान भारतीय राष्ट्रवाद का शुरुआती रूप परिलक्षित हुआ.

इस तरह पश्चिम बंगाल भारत की विविधता में एकता की विशेषता को समृद्ध आधार प्रदान करता है. अलग–अलग जन समुदायों के धर्म, पर्व–त्यौहारों, संगीत, नृत्य, खानपान आदि में व्याप्त विविधता के कारण यहां की संस्कृति बहुत ही विशेष है. यहां की परंपराओं, मान्यताओं और रीतियों को समय–समय पर यहां के समाज सुधारकों और साहित्यकारों द्वारा नया रूप दिया गया. बंगाल में जो समाज सुधार हुए वे आगे चलकर पूरे भारत के लिए प्रेरणा बने. खास बात यह है कि आज पश्चिम बंगाल की संस्कृति केवल इस राज्य तक सीमित न रहकर देश के अन्य हिस्सों में भी जीवनशैली का हिस्सा बनी है

❑ ❑ ❑

– अमित बर्मन
प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

बैंकिंग में डिजिटल परिवर्तन-चैटबॉट्स का युग

डिजिटल परिवर्तन के दौर में ग्राहकों को बेहतरीन अनुभव प्रदान करने के लिहाज से प्रौद्योगिकी अब हर बैंक के लिए केन्द्रीय बिन्दु बन गई है. बैंकिंग की दिग्गज संस्थाएँ, ग्राहकों की अपेक्षाओं की मैपिंग करने, उनकी आवश्यकताओं को समझने और उनके अनुरूप उत्पादों और सेवाओं को अधिकाधिक व्यक्तिपरक बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का पूरा लाभ उठा कर विश्वभर में अपनी पैठ बनाए हुए हैं. प्रौद्योगिकी की मदद से भारतीय बैंकों ने बैंकिंग में कई अवरोधों को लांघते हुए अपनी पहुंच और विस्तार को अप्रतिम रूप से बढ़ाया है वह भी समय की बचत करते हुए. बैंकों में प्रौद्योगिकी का एक बड़ा हिस्सा ग्राहक सेवा पर केन्द्रित है. बैंक अब प्रौद्योगिकी की सहायता से ग्राहकों तक अपनी सेवाएँ और सुविधाएँ बढ़ाने और व्यापक स्तर पर उन तक आसानी से पहुंचने के विभिन्न माध्यम तैयार कर रहे हैं, यहाँ तक कि ग्राहकों को घर बैठे प्रौद्योगिकी जन्य बैंकिंग सेवाएँ और सुविधाएँ उपलब्ध करा रहे हैं. जिन बैंकों में सर्वश्रेष्ठ ग्राहक संबंध मॉडल बने हुए हैं, वे लागत कम करने, दक्षता को बेहतर करने और समग्र अनुभव को बढ़ाने के लिए विश्लेषणात्मक अध्ययन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) -डायरेक्ट चैटबॉट्स तैनात कर रहे हैं.

वैसे तो चैटबॉट्स का विचार 1960 के दशक में पेश किया गया था, लेकिन आजकल इसकी लोकप्रियता जनसामान्य में और उद्योग स्तर पर बढ़ गई है. आजकल चैटबॉट्स कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के साथ-साथ न्यूरो-भाषाई प्रोग्रामिंग (एनएलपी) पर आधारित हैं क्योंकि वे पिछले अनुभवों और प्रक्रियाओं से सीखते हैं और फिर अगली बार वही पैटर्न दोहराते हैं जिसे यांत्रिक अधिगम यानी मशीन लर्निंग के रूप में भी जाना जाता है. संगठनों द्वारा चैटबॉट का उपयोग करना ग्राहकों के साथ परस्पर संवाद का एक नया तरीका है जिसके परिणामस्वरूप वे वेबसाइट पर उपयोगकर्ता के साथ अधिक समय तक जुटे रहते हैं और वेबसाइट पर आगंतुकों द्वारा उत्पाद व सेवाओं के विस्तृत अवलोकन का मार्ग प्रशस्त करते हैं. इस तकनीकी से ग्राहक सेवा की लागत काफी घट जाती है जो कि संगठनों के लिए लाभदायक साबित होता है. बैंकिंग उद्योग ने इसके द्वारा विभिन्न प्रक्रियाओं को स्वचालित करते हुए ग्राहक सहायता लागत में काफी कटौती करते हुए अपने व्यवसाय में वृद्धि की है और उपयोगकर्ता भी इनकी सेवाओं से अत्यंत संतुष्ट हैं.

बैंकिंग में चैटबॉट्स की बढ़ती प्रमुखता

अंतर्राष्ट्रीय विश्लेषक संगठन गार्टनर का आकलन है कि आनेवाले समय में ग्राहक किसी संस्था से अपने 85% तक के कारोबारी व्यवहार बिना किसी मानवीय संपर्क के करने लगेंगे. मोबाइल ऐप लगभग कालातीत हो जाएंगे जब लगभग 20% बैंक इनका उपयोग करना छोड़ देंगे और वार्तालाप प्रयोक्ता संपर्क धीरे-धीरे ग्राहकों से संपर्क करने का बेहतर माध्यम बनेगा. इस बात के सबूत मौजूद हैं कि ऐसे ग्राहकों की संख्या बढ़ती जा रही है, विशेषकर सहस्त्राब्दी पीढी में, जो वित्तीय मामलों में परामर्श और निर्णय के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता को प्राथमिकता देती है. कार्य प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने की क्षमता के साथ-साथ स्वचालित तकनीकी भी बढ़ती जा रही है, जबकि एआई-आधारित व्यवसाय मॉडल, बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं को पहुंचाने के तरीके बदल रहे हैं.

बैंक एआई-संचालित चैटबोट प्लेटफार्मों जैसे कि कोरे.आई द्वारा ग्राहक अनुभव के स्तर को ऊंचे स्तर पर उठाने के लिए सक्षम किए गए संवादी इंटरफेस का लाभ उठा रहे हैं. ये प्लेटफ़ॉर्म सबसे उन्नत मशीन लर्निंग (एमएल) और नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एनएलपी) क्षमताओं में से एक हैं, जो बैंकों में बड़ी मात्रा में डेटा को खंगालते हैं और ग्राहकों को उनकी विशिष्ट अपेक्षाओं को लक्षित करते हुए और व्यक्ति - विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करने में सक्षम बनाते हैं.

बैंकों में चैटबॉट्स

बैंक चैटबॉट्स का बहुत लाभ उठा सकते हैं जो कि सामान्य कारोबार समय के अलावा भी सेवाएँ प्रदान करते हैं जैसे कि बिक्री, सेवाएँ जिससे संगठन के प्रति ग्राहक की निष्ठा बढ़े. बैंकों में कुछ विशिष्ट उपयोगों के लिए चैटबॉट्स की व्यवस्था की जा सकती है जो हैं–

1. **खाता शेष की जानकारी:–** उपयोगकर्ता किसी विशिष्ट खाते या सभी खातों से पसंदीदा भाषा में अलग–अलग तरीकों से खाते में शेषराशि की जांच कर सकते हैं.

2. **लेन–देन का इतिहास:–** लेनदेन की श्रेणी, समय अवधि और मूल्य संबंधी खोज
   - बॉट्स विगत खर्चों के आधार पर भविष्य के खर्च के बारे में सलाह दे सकते हैं
   - खर्च के पिछले रिकॉर्ड को दर्शाना.

3. **फीडबैक प्रबंधन:–** बॉट को उत्पादों की संपूर्ण सूचना और सर्वेक्षण प्रश्नावली प्रविष्ट कर प्रशिक्षित किया जा सकता है. उपयोगकर्ताओं से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं के आधार पर, बॉट में उन सभी प्रश्नों को शामिल किया जा सकता है जिनके लिए उन्हें उत्तर की आवश्यकता होती है.

4. **बॉट–एजेंट हैंडऑफ:–** कोरे. ई ने चैटबॉट्स तैनात किये हैं जो ग्राहकों की भावनात्मक स्थिति के आधार पर प्रतिक्रिया देने के लिए प्रशिक्षित हैं. बॉट्स भावुक विश्लेषण करते हैं और भावुकता स्तर को देखते हैं कि कब उन्हें मानव एजेंटों के सुपुर्द कर दिया जाना चाहिए.

5. **ऋण उत्पाद खोज:–** बॉट उपयोगकर्ता को उनकी आवश्यकताओं के आधार पर विशिष्ट प्रकार के ऋणों के लिए आवेदन करने में मदद करते हैं.

6. **अक्सर पूछे जानेवाले प्रश्न:–** बॉट उपयोगकर्ता को अक्सर पूछे जानेवाले प्रश्न का जवाब देने में मदद करता है और कई इनपुट विकल्प प्रदान करते हैं.

7. **एटीएम और शाखा खोजना:–** बॉट किसी विशिष्ट शहर या स्थान पर उपयोगकर्ता को एटीएम या शाखा खोजने में मदद करता है. बॉट उन्हें विदेशी मुद्रा सेवाओं, दिव्यांग अनुकूल शाखा आदि जैसी सुविधाओं के आधार पर परिणामों को छानकर प्रस्तुत करने में मदद करते हैं.

8. **बिल भुगतान:–** ग्राहक के बिल भुगतान के लिए सक्षम करने, नए प्राप्तकर्ताओं को जोड़ने और बारंबार किए जानेवाले आवर्ती भुगतान को शामिल करने, साथ ही भविष्य में आवर्ती भुगतानों पर नज़र रखने में सहायता करते हैं.

9. **निधि अंतरण :–** ग्राहकों को विभिन्न खातों में नियमानुसार आपस में निधि अंतरण के लिए सक्षम करते हैं, चाहे आंतरिक हो या बाहरी.

10. **खाता खोलना :–** बॉट नए बैंक या क्रेडिट कार्ड खाता खोलने के लिए– उपयोगकर्ता का मार्गदर्शन करते हैं.

11. **कार्रवाई योग्य चेतावनी देना :–** उपयोगकर्ता निर्धारित या बैंक निर्धारित – विकल्प पर या स्वचालित:
    - o खाताशेष चेतावनी
    - o धोखाधड़ी चेतावनी
    - o मूल्य या समय के आधार पर लेनदेन चेतावनी
    - o विशिष्ट सुविधाएँ – वेतन सूची, शुल्क आदि

12. **बीमा:–** बॉट, उपयोगकर्ता को आवश्यकतानुसार बीमा खरीदने में मदद करते हैं, यह मौजूदा उपयोगकर्ता द्वारा धारित पॉलिसियों को भी याद रखते हैं.

13. **क्रेडिट कार्ड खोज:–** बॉट्स, उपयोगकर्ता को आवश्यकता के आधार पर विशिष्ट प्रकार के क्रेडिट कार्ड लेने में मदद करते हैं.

14. **पी 2 पी भुगतान :–** बॉट्स, मौजूदा एवं नए उपयोगकर्ता को निधि अंतरण करने में मदद करते हैं.

15. **अनुरोध या पूछताछ की सुविधा :–**
    - o जाँच के लिए आवेदन करना
    - o डाक पता बदलना
    - o सुरक्षित बॉक्स के लिए अनुरोध
    - o चेक को रद्द करना
    - o कार्ड ब्लॉक करना
    - o जमा या भुगतान किए गए चेक की स्थिति की जाँच करना.

बैंकों में चैटबॉट्स सेवाओं से लाभ बैंकों में ग्राहकों से संपर्क की प्रक्रिया को एकीकृत करते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता

की नींव पर चैटबॉट्स को शामिल करके इनके द्वारा ग्राहकों के साथ त्वरित और व्यक्तिगत संवाद स्थापित किया जा सकता है. वित्तीय संस्थाओं में चैटबॉट्स के कुछ प्रमुख लाभ हैं –

1) **बड़ी बचत**

मनुष्य की तुलना में चैटबॉट्स को विकसित करने और उनके रखरखाव की लागत काफी सस्ती होती है. चैटबॉट्स को स्टैंडअलोन बैंकिंग ऐप्स की तुलना में कम कोडिंग की आवश्यकता होती है, चैनलों का विस्तार करके इसे प्रयोग किया जा सकता है और अब चैटबॉट्स के क्लाउड–आधारित प्रणाली से जुड़े होने के कारण इसके लिए महंगे डेटा भंडारण की आवश्यकता नहीं होती है. इन एआई आधारित चैटबॉट्स की मदद से, मानव संसाधनों को नियोजित करने की आवश्यकता नहीं होती और न ही उन्हें एक निर्दिष्ट स्थान आबंटित करने पर कोई अतिरिक्त निवेश की. वास्तव में यदि बुद्धिमानी से उपयोग किया जाए तो चैटबॉट्स लगभग 30% तक खर्च कम करने में मदद कर सकते हैं.

2) **नया व्यवसाय**

किसी भी अन्य सेवा की तरह, बैंकों को नए ग्राहकों को जोड़ना आवश्यक होता है. यदि बैंक की वेबसाइट पर कोई आगंतुक को एक विनम्र 'हैलो' के साथ अभिवादन किया जाए, किसी उत्पाद के बारे में सवाल पूछने के लिए आमंत्रित किया जाए और सही दिशा दिखाई जाए, जहां से आवश्यक जानकारी पा सकते हैं तो परिणामस्वरूप इससे नये ग्राहक जुड़ने की संभावना बहुत बढ़ जाती है

3) **ग्राहक सहायता**

चैटबॉट्स के आगमन के साथ, ग्राहकों को 24 X 7 सहायता प्रदान करना संभव हो गया है. वे ग्राहकों के प्रश्नों को हल करने और उन्हें अपने नए उत्पादों और सेवाओं के बारे में सूचना देने जैसे नेमी कार्यों में आपकी मदद कर सकते हैं. इससे आप कम समय में अधिक प्रश्नों को हल करके, बेहतर ग्राहक संतुष्टि सुनिश्चित कर सकते हैं. साथ ही, आजकल ग्राहक हमेशा डिजिटल प्लैटफॉर्म पर 'सदा विद्यमान' रहते हैं, उन्हें दिनभर तत्काल चैट सुविधा देकर स्पर्धात्मक बढ़त बनाए रख सकते हैं. यह पहल नए ग्राहकों को आकर्षित करने और बनाए रखने में बहुत लाभदायक सिद्ध होगी.

4) **कर्मचारी समर्थन**

चैटबॉट्स से न केवल बैंक के ग्राहक बल्कि बैंक कर्मचारी भी लाभान्वित हो सकते हैं. इंट्रानेट–आधारित चैटबॉट्स बेहतर आंतरिक संचार के लिए कर्मचारियों को विभिन्न शाखाओं से महत्वपूर्ण सूचना इकट्ठा करने और प्रबंधन को और अभिनव कदम उठाने की ओर अग्रसर कर सकते हैं (जैसे कि कर्मचारियों के लिए संदेशों को पहुँचाने के लिए तकनीकी का उपयोग करना, सॉफ्टवेयर एक्सेस की अनुमति देना और पासवर्ड रीसेट करने जैसे नेमी आईटी अनुरोधों को संभालना). इस प्रकार, यह कर्मचारियों को महत्वपूर्ण सूचना साझा करने में और बैंक को उत्पादकता बढ़ाने में सार्थक सिद्ध होता है जिससे दोनों ही लाभ की स्थिति में होते हैं.

5) **स्वचालित डेटा संग्रहण**

चैटबॉट्स उत्कृष्ट डेटा विश्लेषिकी उपकरण हैं. वे विशिष्ट शब्दों के डालने पर ग्राहकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को जानने का प्रयास करते हैं, वे ग्राहकों की वर्तमान और अत्यावश्यक जरूरतों पर एक विहंगम दृश्य प्रस्तुत कर सकते हैं. उदाहरण के लिए, चैटबॉट्स के अनुत्तरित प्रश्नों और ग्राहकों द्वारा उपयोग किए गए शब्दों को देखकर, डेवलपर नए ट्रिगर बना सकते हैं और चैटबॉट्स की क्षमताओं को विकसित कर सकते हैं. बारंबार किए जानेवाले बैंक–संबंधी कार्यों को स्वचालित करने से ग्राहकों को भी अकसर पूछे गए प्रश्नों का त्वरित उत्तर मिल सकेगा. चैटबॉट्स महत्वपूर्ण सूचना भी एकत्रित करेंगे, जो वास्तविक समय, व्यावहारिक और कार्रवाई योग्य रिपोर्ट बनाने के लिए एक केंद्रीय डेटाबेस में फीड कर सकते हैं, जिसके आधार पर बैंककर्मी सेवाओं और ग्राहकों की संतुष्टि में सुधार करने के लिए पहल कर सकते हैं.

आगे का रास्ता

भारतीय बैंकिंग उद्योग में एआई, चैटबॉट्स और उन्नत प्रौद्योगिकी की क्षमताओं का प्रयोग हो रहा है. एआई, चैटबॉट वित्तीय क्षेत्र में कई समस्याओं का समाधान करते

हैं और व्यापारिक विश्लेषण समयांतर में ही परिणामों पर विश्लेषणात्मक दृष्टि डाल सकते हैं. वित्तीय सेवाओं के उपभोक्ता निरंतर बदलते हुए वित्तीय बाज़ार में स्वयं को अग्रणी स्थान पर रखने के लिए अभिनव रणनीतियों की मांग करते हैं. पारंपरिक बैंकिंग विधियों के विपरीत, चैटबॉट्स चौबीसों घंटे विवेकसम्मत ग्राहक सेवा प्रदान करने के लिए बेहतर और तेज उपयोगकर्ता अनुभव ला सकते हैं. चैटबॉट्स संगठन में संचालन को सुव्यवस्थित करने में मदद करते हैं, ग्राहक सहायता को स्वचालित करते हैं और एक अधिक सुविधाजनक व सुखद ग्राहक अनुभव प्रदान करते हैं. बातचीत के माध्यम से न्यूनतम सेटअप, आसान एकीकरण और एक्सेस, चैटबॉट्स अपनाने में प्रमुख संवाहक हैं. न्यूनतम स्थापना लागत, सरल एकीकरण और संवाद के माध्यम से व्यापक पहुँच के बल पर चैटबॉट्स बैंकिंग क्षेत्र में एक नवोन्मेषी और क्रांतिकारी माध्यम के रूप में तेज़ी से उभर कर बैंकिंग क्षितिज पर छा रहे हैं. ❑ ❑ ❑

– जे. राजेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक,
बड़ौदा अकादमी, चेन्नै

कोयम्बटूर क्षेत्र में स्कूली विद्यार्थियों के लिए हिन्दी संगोष्ठी आयोजित

दिनांक 13 मार्च 2020 को कोयम्बटूर क्षेत्र द्वारा उडुमलैपेट, कोयम्बत्तूर, कुन्नूर स्थित विश्वविद्यालयों तथा कालेजों के विद्यार्थियों के लिए एक दिवसीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया. इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र उपस्थित रहे. कार्यक्रम में क्षेत्र के उप महाप्रबंधक श्री सी सेल्वराजु, सहायक महाप्रबंधक श्री के. मुरगैया तथा सहायक महाप्रबंधक द्वय श्री एम. जयकिशन एवं श्री पद्मनाभन अय्यर तथा मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती वी एम गौरी उपस्थित रहीं.

मेधावी विद्यार्थी सम्मान कार्यक्रम

अहमदाबाद क्षेत्र – 2

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद 2 द्वारा 23 जनवरी 2020 को बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत गुजरात विद्यापीठ में उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री पराग गोगटे की अध्यक्षता में एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर महाप्रबंधक श्रीमती अर्चना पांडेय एवं उप अंचल प्रमुख श्री मोतीलाल मीणा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे.

जमशेदपुर क्षेत्र

20 मार्च 2020 को क्षेत्रीय कार्यालय, जमशेदपुर के क्षेत्रीय प्रमुख श्री जगदीश तुंगारिया द्वारा रांची विश्वविद्यालय में बडौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत शैक्षणिक सत्र 2017-19 के दौरान एम.ए. (हिन्दी) में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी विद्यार्थियों क्रमशः सुश्री राधा कुमारी एवं श्री प्रिंस कुमार को सम्मानित किया गया.

बर्द्धमान क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, बर्द्धमान की ओर से बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत बर्द्धमान विश्वविद्यालय के एम.ए (हिन्दी) के मेधावी विद्यार्थियों को उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री दिलीप कुमार प्रसाद द्वारा सम्मानित किया गया.

'सैंडविच जेनरेशन'

मुझे कल पता चला कि मैं सैंडविच जेनरेशन हूँ. यह आत्म ज्ञान मुझे मेरे सोलह वर्षीय बेटे ने दिया. उसने कल मुझसे पांच हजार रूपये की मांग की. मैंने जब इस आकस्मिक धनराशि की मांग का कारण पूछा.

उसने थोड़ा झिझकते हुए कहा – उसे एक नई डिजिटल गैजेट खरीदनी है.

उसने उस डिजिटल गैजेट नाम भी बताया था, जो मेरे पल्ले नहीं पड़ा.

मेरी मुरझाई मुख मुद्रा देखकर वह समझ गया. वार्ता असफल होने वाली है.

मैंने कह दिया, अभी संभव नहीं है. अभी ही रिया के कॉलेज की फीस भरी है और इस महीने दो इन्शुरेन्स पालिसियों के प्रीमियम का भी भुगतान करना है.

उसका विद्रोही और लटका मुंह देखना मुझे भी अच्छा नहीं लगा. मैंने अपने जस्टिफिकेशन को और तगड़ा बनाया.

पिछले महीने ही तुम्हारे दादा की बीमारी में काफी खर्च हुआ. इस महीने गांव से तेरी दादी को भी यहाँ बुलवाकर उसके मोतियाबिंद का ऑपरेशन करवाना है.

यह सुनते ही वह टप से बोल पड़ा, यही प्रॉब्लम है आप जैसे 'सैंडविच जेनरेशन' के लोगो के लिए हमेशा रोते रहना, हमेशा झींकते रहना. हर समय बजट, प्लानिंग.

मैं कुछ बोलता इससे पहले वह बड़बड़ाते हुए निकल गया.

मैं सोचता रह गया,'यह सैंडविच जेनरेशन क्या होता है?'

मैंने तुरंत गूगल पर सर्च किया. जो उत्तर मिला वह बड़ा ही सटीक था मेरे ऊपर.

'सैंडविच पीढ़ी' वह पीढ़ी है जो चालीस के आसपास की है जिसके ऊपर अपने बच्चों के लालन पालन, शिक्षा-दीक्षा का दायित्व है साथ ही अपने वृद्ध माँ-बाप के आर्थिक रूप से देखभाल की भी जिम्मेदारी है.

यह पीढ़ी एक तरह अपने बच्चों के लिए एनर्जी ड्रिंक खरीदती है दूसरी तरफ अपने माँ-बाप के लिए च्यवनप्राश भी. एक तरफ यह अपने माँ-पिता की चार-धाम यात्रा बुक करवाती है, दूसरी तरफ बच्चों की फरमाईस पर शिमला और मनाली का भी बजट रखती है. इस पीढ़ी का हाथ हमेशा तंग रहता है. हमेशा जब तक कोई खर्च सर पर ना पहुँच जाए तब तक ये किसी वित्तीय चमत्कार की आशा बनाये रखते है.

यह सब पढते हुए मैं मुस्कुरा उठा और कह उठा मुझे गर्व है कि मैं सेतु के रूप में दोनों किनारों को जोड़ रहा हूँ और मजबूती से खड़ा भी हूँ. ❑❑❑

– गौतम कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक एवं संकाय
बड़ौदा अकादमी, बड़ौदा

नराकास पुरस्कार

बैंक के विभिन्न कार्यालयों को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों से प्राप्त पुरस्कारों की झलकियां :

भोपाल अंचल

कालिकट क्षेत्र

जमशेदपुर क्षेत्र

भुवनेश्वर क्षेत्र

दुर्ग क्षेत्र

रायपुर क्षेत्र

मैसूरू क्षेत्र

आइये ! सीखें

क्र.	हिंदी	तेलुगु	तमिल	मलयालम	
1.	बैठिए / बिराजिए	कूर्चोंडि / आसीनुलु कंडि	उट्का-रुंगळ् / अम-रुंगळ	इरिक्यू	
2.	यहां शोर न मचाएं	इक्कड गोल चेय्यकंडि	इंगु सत्तम पोड़ा-दीर्गळ	ईविडे शब्दं उण्डाक्करुतु	
3.	इतनी जोर से न बोलिए	बिग्गरगा माटलाडवद्दु	इव्व-ळवु सत्तमाग पेसा-दीर्गळ	इत्र उरक्के संसारिक्यरुत्	
4.	इन कागजों को संभाल कर रखें	ई कागितालनु जाग्रत चेय्यि	इन्द कागि-दंग्ळै वत्तिर-माग वैति-रुंगळ	ई कडलासुकलेल्लां सूक्षिच्चु वय्क्यू	
5.	धैर्य से काम लो	ओपिक पट्टु	पोरुमै-याग इरुंगळ	क्षमयोडे चेय्यू	
6.	तिजोरी में ताला लगाओ	इनप्पेट्टेकु ताळम वेय्यि	कल्लावै पूट्टु-गाळ	सेफ पूट्टुक	
7.	इन कागजों को फाइल कर दो	ई कागितालनु फैल्लो पेट्टु	इंद कागि-दंगळै कोप्पु सेय्युं-गळ	ई कटलासुकल् फयल् चेय्युक	
8.	इन निमंत्रण - पत्रों को भेज दो	ई आह्वानमुलनु पंपु	इंद अळैप्पि-दळ्कळै अनुप्पुंगळ	ई क्षणक्कत्तुकल् अयक्युक	
9.	डॉक्टर को बुलाओ	डाक्टरुनु पिलिपिंचु	डाक्टरै कूप्पिडु	डाक्टरे विलिक्यू	
10.	मुझे अखबार दो	वार्ता पत्रिक तीसुकु रा	एनक्कु सेय्दित्तासल कोडु	एनिक्यु पत्रं तरू	
11.	इस पृष्ठ को जोर से पढ़ो	ई पुटनु/पेजीनु बिग्गरगा चदुवु	इंद पक्कत्तै उर-क्क पडि	ई पुरं / ताळ उरक्के वायिक्यूक	
12.	एक कविता सुनाओ	ओ पद्यं चदिवि विनिपिंचु	ओरु कविदै सोल्लु	ओरु कवित केल्पिक्यू	
13.	आप कभी भी आ सकते हैं	मीरु एप्पुडैना सरे रावच्चु	नींगळ् एप्पोदु वेण्डु-मानालुम् वरलाम्	तांग्ल्क् एप्पोल् वेणमेंगिलुम् वराम्	
14.	काम बंद न करो	पनिनि आपवद्दू	वेलैयै मुड़क्कादे/ निरु-त्तादे	जोलि निरुत्तरुतु	
15.	देखो आगे क्या होता है	मुंदु एं जरुगुतुंदो चूद्दां	एन्न नडक्कि-रदेन्नु पार्पोम्	इनि एन्तुण्डाकुमेन्नु काणां	

भारतीय भाषाएं

	कन्नड	गुजराती	बांग्ला	मराठी
	कुळितुकोळ्ळी	बेसो / बिराजो	बोसुन	बसा
	इल्लि गलाटे माडबेडि	अहीं अवाज न करशो	एखाने अवाज़ कोरबेन ना	येथे गोंगाट करू नका
	इष्टु जोरागि मातनाड बेडि	आटलु बधुं जोरथी न बोलशो	एतो जोरे/ चेंचिये कथा बोलबेन ना	इतक्या मोठ्याने बोलू नका
	ई एल्ला कागदगळन्नु हुशारागि इडि	आ कागळो संभाळीने राखजो	एई कागोजगुलि ठिक कोरे राखुन/ सामले राखुन	ही कागदपत्रे जपून ठेवा
	धैर्य इट्टुको	धीरज राखो ताळुं	धइयर्ज धरो	धैर्य ठेवा
	तिजोरिय बीगा हाकु	तिजोरीने चावी लगाओं	सिन्दुके ताला दिये दाओ	तिजोरीला कुलूप लावा
	ई कागदगळन्नु फाइल माडु	आ कगळोने फाइल करो	कागोजगुलि के फाइले राखो	या कागदांना फाइल मध्ये ठेवा.
	ई आमंत्रणा पत्रिकेगळन्नु कळिसि कोडु	आ निमंत्रणपत्रो मोकली दो	एई निमंत्रन पत्रोगुलि पाठिये दाओ	ही आमंत्रण पत्रे पाठवून द्या
	डाक्टरन्नु करेसु	डाक्टरने बोलावो	डाक्टर के डाको	डॉक्टरांना बोलवा
	ननगे समाचार पत्रिकेयन्नु तन्दु कोडु	मने छापुं आपो	आमाके एकटि खोबोरे कागज एने दाओ	मला वर्तमान पत्र द्या
	ई पुटवन्नु जोरागि ओदु	आ पानु जोरथी वांचो	एई पाताटि चेंचिये पोडो	हे पृष्ठ जोराने वाचा
	ओंदु पदवन्नु हेळु	एक कविता संभळावो	एकटि कोबिता शोनाओ	एक कविता ऐकवा
	नीवु यावागा बेकादरू बरबहुदु	तमे क्यारे पण आवी शको छो	आपनी जेकोनो समय आसते पारेन	आपण कधीही येऊ शकता.
	केलसा निल्लिस बेडा	काम बंध न करो	काज बन्धो कोरो ना	काम बंद करू नका
	मुन्देनागुवुदु कादु नोडु	जुओ के आगळ शुं थाय छे	देखो आगे की होय	बघा, पुढे काय होते ते.

प्रत्येक वर्ष बैंक के विभिन्न कार्यालयों में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन धूमधाम से किया जाता है. पिछले कुछ वर्षों से विदेशों में स्थित विभिन्न कार्यालयों में भी यह समारोह धूमधाम से मनाया जा रहा है. विदेशों में हिन्दी और भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से यह कार्यक्रम काफी उपयोगी साबित हुआ है. पत्रिका के पाठकों के लिए हम इस आयोजन की झलकियां प्रस्तुत कर रहे हैं :

विदेशों में स्थित कार्यालयों में आयोजित विश्व हिन्दी दिवस

सुवा, फीजी

तंजानिया

हांगकांग

पोर्ट लुइस

युगांडा

सिंगापुर

केन्या

दुबई

देश के विभिन्न कार्यालयों में आयोजित विश्व हिन्दी दिवस

बेंगलूरु अंचल

बेंगलूरु अंचल द्वारा आयोजित विश्व हिन्दी दिवस समारोह के दौरान महाप्रबंधक श्री एस. ए. सुदर्शन, मुख्य अतिथि श्री ईश्वर चंद्र मिश्र एवं उप महाप्रबंधक श्री एस. के. रस्तोगी.

पटना अंचल

अंचल एवं क्षेत्रीय कार्यालय, पटना द्वारा विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में उप महाप्रबंधक श्री नरेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वी क्षेत्र), कोलकाता के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री निर्मल कुमार दूबे उपस्थित रहे.

पुणे अंचल

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर अंचल एवं क्षेत्रीय कार्यालय पुणे द्वारा उप अंचल प्रमुख श्री हरीश चन्द की अध्यक्षता एवं उप-क्षेत्रीय प्रमुख श्री टी.पी. तुलस्यान की उपस्थिति में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया.

बरेली अंचल

अंचल कार्यालय, बरेली में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री हरदीप सिंह ने की.

चंडीगढ़ अंचल

अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ में अंचल प्रमुख श्री एम.एल. रोहिल्ला व सहायक महाप्रबंधक श्री आर. डी. नेगी की उपस्थिति में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया. कार्यक्रम में प्रसिद्ध लेखक श्री जंग बहादुर गोयल उपस्थित रहे.

राजकोट अंचल

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर राजकोट अंचल द्वारा महाप्रबंधक श्री संजीव डोभाल की अध्यक्षता में विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया. इस गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ पत्रकार श्री हिमांशु भियानी और उप अंचल प्रमुख श्री प्रदीप सचदेवा भी उपस्थित रहे.

नई दिल्ली अंचल

अंचल कार्यालय, नई दिल्ली में दि.म.क्षे.-1, 2 व 3 के साथ संयुक्त रूप से विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में दि.म.क्षे.-1 एवं 2 द्वारा बैंक की मेधावी विद्यार्थी योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया गया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि कवि श्री मनीष मधुकर, अंचल प्रमुख श्री दविन्दर पाल ग्रोवर, उप अंचल प्रमुख श्री आर.पी. बब्बर, दिल्ली स्थित क्षेत्रों के उप क्षेत्रीय प्रमुख उपस्थित रहे.

अहमदाबाद अंचल

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद, अहमदाबाद क्षेत्र-1 एवं 2 द्वारा संयुक्त रूप से महाप्रबंधक श्रीमती अर्चना पांडे की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया. कार्यक्रम की मुख्य अतिथि गुजरात विद्यापीठ की प्राध्यापक डॉ. अंजना संधीर रहीं. इस अवसर पर अहमदाबाद क्षेत्र-1 के क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजेश कुमार भी उपस्थित रहे.

कोलकाता अंचल

अंचल कार्यालय, कोलकाता में अंचल प्रमुख श्री पी. विनोद कुमार रेड्डी की अध्यक्षता में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. अमरनाथ, पूर्व विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग, कोलकाता विश्वविद्यालय) उपस्थित रहे. इस अवसर पर महाप्रबंधक (मुख्य समन्वयन) श्री विश्वरूप दास, पूर्व उप अंचल प्रमुख श्री पी. के. दास, क्षेत्रीय प्रमुख (कोलकाता मेट्रो) गोबिंद विश्वास भी उपस्थित रहे.

बड़ौदा अंचल

अंचल कार्यालय, बड़ौदा द्वारा बड़ौदा अकादमी, बड़ौदा में सहायक महाप्रबंधक (मासंप्र) श्री के वी श्याम कुमार की अध्यक्षता विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया. इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में मुख्य प्रबंधक (सेवानिवृत्त) श्री जयप्रकाश सौंखिया और मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय प्रमुख, बड़ौदा जिला श्री संजीव आनंद, अकादमी के प्रमुख श्री त्रिलोचन साहू भी उपस्थित रहे.

लखनऊ अंचल

अंचल व क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ द्वारा संयुक्त रूप से विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य महाप्रबंधक डॉ. रामजस यादव, क्षेत्रीय प्रमुख श्री ए. के. सिंह, मुख्य अतिथि के रूप में कविवर श्री वेदव्रत बाजपेई तथा उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री एस. पी. सिंह एवं श्री योगेश कुमार शर्मा उपस्थित रहे.

एर्णाकुलम अंचल

एर्णाकुलम अंचल एवं क्षेत्र में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया. कार्यक्रम का संचालन सुश्री नीना देवसी, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा एर्णाकुलम अंचल एवं सुश्री विजिता वी, वरि. प्रबंधक (राजभाषा) एर्णाकुलम क्षेत्र ने किया.

सरकारी संपर्क विभाग, नई दिल्ली

सरकारी संपर्क विभाग, नई दिल्ली में विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन महाप्रबंधक श्री जी. बी. पांडा एवं अन्य अधिकारीगण की उपस्थिति में किया गया.

आणंद क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद द्वारा उप महाप्रबंधक श्री आर. के. पाटील एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री एस. पी. शारदा की उपस्थिति में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में आणंद इंस्टीट्यूट ऑफ पीजी स्टडीज़, कॉलेज के राजभाषा विभाग की प्रमुख डॉ. अनु मेहता उपस्थित थीं.

राजकोट क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट द्वारा विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में 'वैश्विक स्तर पर हिन्दी का महत्व' पर परिचर्चा आयोजित की गयी. इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रबंधक श्री संजय गुप्ता, उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री अशोक गोस्वामी व श्री जगजीत कुमार उपस्थित रहे.

मैसूरु क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया. इस कार्यक्रम में प्रोफेसर प्रतिभा मुदलीयार, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, मैसूरु विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय प्रमुख सत्यनारायण नायक, उप क्षेत्रीय प्रमुख-I श्री मुरली कृष्णा एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख-II श्री एच एस नागेश उपस्थित रहे.

बर्द्धमान क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, बर्द्धमान में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बर्द्धमान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ. शशि कुमार शर्मा सहित क्षेत्रीय प्रमुख श्री शांतनु मुखर्जी तथा उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री दिलीप कुमार प्रसाद उपस्थित रहे.

भोपाल दक्षिण क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल दक्षिण में विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री अनंत माधव एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख-2 श्री अजय कुमार दीक्षित उपस्थित रहे.

इलाहाबाद क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, इलाहाबाद में क्षेत्रीय प्रमुख श्री दिवाकर पी सिंह की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में उप क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री पी पी यादव भी उपस्थित रहे.

जमशेदपुर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, जमशेदपुर में क्षेत्रीय प्रमुख श्री जगदीश तुंगारिया की अध्यक्षता में विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर सहायक महाप्रबंधक श्री संजय कुमार भी उपस्थित रहे.

गया क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, गया में क्षेत्रीय प्रमुख श्री मनीष कुमार की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर उप क्षेत्रीय प्रमुख द्वय श्री महेश कुमार दास तथा श्री सनोज कुमार उपस्थित रहे.

मुजफ्फरपुर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर में क्षेत्रीय प्रमुख श्री बाणीब्रत बिश्वास की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री सी.पी.बी. वर्मा उपस्थित रहे.

भुवनेश्वर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर द्वारा उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री हरिश्चंद्र सिन्हा की अध्यक्षता में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नराकास (बैंक), भुवनेश्वर के सदस्य सचिव श्री आलोक कुमार भी उपस्थित रहे.

जालंधर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर द्वारा गुरूनानक देव विश्वविद्यालय में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया. इस अवसर पर सत्र 2017-18 एवं 2018-19 के बड़ौदा मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित भी किया गया.

मेहसाना क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, मेहसाना में उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री भवानी सिंह राठौड़ की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में साहित्यकार डॉ. ईश्वर सिंह चौहान उपस्थित थे.

बड़ौदा एपेक्स अकादमी, गांधीनगर

बड़ौदा एपेक्स अकादमी, गांधीनगर में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य शिक्षण अधिकारी श्री पंकज जानी ने की.

सुल्तानपुर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, सुल्तानपुर द्वारा क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुबोध जैन की अध्यक्षता में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया. इस अवसर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री डी. एस. मिश्रा भी उपस्थित रहे.

बरेली क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली द्वारा क्षेत्रीय प्रमुख श्री अतुल कुमार बंसल की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख द्वय श्री बी. के. अग्रवाल और श्री विजय कुमार अरोरा उपस्थित रहे.

कानपुर क्षेत्र

विश्व हिन्दी दिवस पर क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर में ई-मेल, बैंकिंग शब्दावली तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख श्री बी. आर. धीमान तथा उप क्षेत्रीय प्रमुख श्रीमती रीता बाजपेयी उपस्थित रहीं.

भीलवाड़ा क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, भीलवाड़ा द्वारा उप महाप्रबंधक, श्री राजेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख द्वय श्री श्याम बाबू शर्मा तथा श्री एस. के. बिरानी भी उपस्थित रहे.

उदयपुर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया इस अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में अंतर्राष्ट्रीय अनुवादक श्रीकृष्ण जुगनू उपस्थित रहे.

जनवरी–मार्च 2020

अपनी जड़ से जुड़े रहने की सीख देती 'कुर्सी'

किसी भी नौकरी का असर हमारी जीवन शैली पर होता है, लेकिन वह नौकरी ऐसी हो, जिसमें समय-समय स्थानांतरण होता हो तो जीवन के कड़वे-मीठे अनुभव को चखने का अवसर भी प्राप्त होता है. कड़ी मेहनत, असाध्य तपस्या एवं लगन के पश्चात मुझे वर्ष 1994 में बैंक ऑफ़ बड़ौदा में लिपिक पद पर नौकरी मिली. मेरी पोस्टिंग वजीपुर, जिला सवाईमाधोपुर, राजस्थान में हुई. घर के करीब आने की चाहत में अंतर-अंचल स्थानांतरण के लिए मैंने आवेदन किया तथा वर्ष 1999 में मेरा स्थानांतरण हुआ एवं मेरी पोस्टिंग नाबाबगंज, इलाहबाद में हुई. मैंने पूरी लगन एवं ईमानदारी के साथ अपने कार्यदायित्वों का निर्वहन किया, जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2001 में मेरी पदोन्नति अधिकारी संवर्ग में हो गई. उन दिनों मेरी जरूरतें अत्यंत सीमित थी, जीवन-यापन हेतु आवश्यक आधारभूत आवश्यकताओं के अतिरिक्त न तो मेरे पास कुछ था और न ही उन दिनों मुझे कभी उनकी कमी खली. अत्यंत सीमित संसाधनों के साथ जीवन रूपी गाड़ी तीव्रता से आगे बढ़ रही थी. अचानक मेरे शाखा प्रमुख एक ऐसी ख़बर लेकर मेरे पास आए, जिसे सुनकर मैं अचंभित रह गया, मानो मेरे पैर के नीचे की ज़मीन खिसक गई हो.

शाखा प्रमुख ने कहा - राजीव जी! आपके स्थानांतरण का आदेश आया है. आपका स्थानांतरण बैंक के प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में किया गया है.

लेकिन सर! बड़ौदा तो मेरे पैतृक निवास से काफी दूर है. मैं वहाँ किसी को पहचानता नहीं हूँ. वहाँ मैं कैसे कार्य कर पाऊँगा? मैंने अनायास ही अपने शाखा प्रमुख से कहा.

राजीव जी ! आप यहाँ के लिए भी नए ही थे न. लेकिन काम करते - करते यहाँ लोगों के साथ आप जुड़ गए तथा आपने अपने कार्यदायित्वों को निभाया है न. वैसे ही बड़ौदा में भी आपको अच्छे सहकर्मी मिलेंगे, बड़ौदा शहर अच्छा है. मुझे पूरा विश्वास है कि आपका मन वहाँ लग जाएगा.वैसे भी बैंक की नौकरी में नियमित अंतराल पर स्थानांतरण होना निश्चित है. समय-समय पर आपको कार्य करने हेतु नई जगह मिलेगी, नए लोग मिलेंगे तथा कार्य करने का नया अनुभव मिलेगा - शाखा प्रमुख ने कहा.

घर लौट कर मैंने अपनी धर्मपत्नी से मेरे स्थानांतरण की चर्चा की.

बड़ौदा! इतनी दूर! कैसे जाएँगे? कहाँ रहेंगे?- मेरी धर्मपत्नी ने प्रश्नों की बौछारें मेरे ऊपर करना आरंभ कर दिया. मैंने उसे समझाया-नाबाबगंज, इलाहबाद में मेरा कौन अपना था? मैं यहाँ कहाँ किसी को पहचानता था? लेकिन रहते-रहते पहचान बढ़ी न! मित्र बने न! वहाँ भी ऐसे ही लोग मिलेंगे. दूसरी बात यह है कि नौकरी कर रहे हैं, जहाँ जाने का आदेश मिला है, जाना होगा. इस तरह का स्पष्टीकरण देकर कहीं न कहीं मैं अपने आप को ही सांत्वना दे रहा था. देखते ही देखते मेरा बड़ौदा जाने का समय भी आ गया. मैंने बड़ौदा में रिपोर्ट किया तथा मेरी पोस्टिंग प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में हुई. वहाँ कार्यभार ग्रहण करने के 6 माह के पश्चात मुझे बैंक का अपार्टमेंट, 'अक्षय अपार्टमेंट' का फ्लैट नंबर 101 आबंटित हुआ, जो कि ओल्ड पादरा रोड पर स्थित था. मैं अपने मित्र श्री आर.के.चौहान, जो जुलाई 2019 में वरिष्ठ प्रबंधक के पद से करेंसी चेस्ट, इलाहाबाद से सेवानिवृत्त हुए, के साथ बैंक का फ्लैट देखने गया. मेरे घर में जो सामान था, उसकी अपेक्षा फ्लैट काफी बड़ा था. अपना फ्लैट देखने के पश्चात् हम आस-पास के फ्लैट में रह रहे अधिकारियों से मिलने के लिए उनके-उनके फ्लैट में गए. मेरे फ्लैट के आस-पास के फ्लैट में रह रहे अधिकारियों के घर में सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण सामान मौजूद थे, जिसे देखकर मन में हीन भावना घर करने लगी. मैं सोचने लगा कि मेरे घर पर कुछ विशेष सामान है ही नहीं, जो है भी वह पुराना है. मैं कैसे उन सामानों को लेकर यहाँ शिफ्ट करूँगा? लोग मेरे सामानों को देखकर क्या कहेंगे? इसी काशमकश में मैंने अपने मित्र श्री आर.के.चौहान से चर्चा की.

इतनी सी बात है! इसमें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है. तुम ऐसा करो कि अपना सामान किसी भी कार्यदिवस में दोपहर के समय में शिफ्ट करना ताकि लोग या तो अपने-अपने कार्यस्थल पर हों या घर पर आराम कर रहे हों.- चौहान जी ने कहा.

मुझे उनका सुझाव बहुत पसंद आया. मैंने भी तय कर लिया कि जिस भी पैकर्स-मूवर्स से अपना सामान शिफ्ट करूँगा, उसको सख़्त हिदायत दे दूँगा कि मेरा सामान कार्यदिवस में दोपहर के समय में डिलिवर करें. उसके कुछ दिनों बाद मैंने शिफ्टिंग की योजना बनाई. शिफ्टिंग के दौरान सभी सामानों को पैक करने के पश्चात् मेरा ध्यान ताँत वाली दो कुर्सियों पर पड़ा. दोनों की स्थिति खराब थी. एक का हैंडल थोड़ा टूटा हुआ था, लेकिन

उसकी ताँत अच्छी थी. दूसरी की ताँत खराब थी, लेकिन हैंडल अच्छा था. मैंने यह सोचा कि जिसकी ताँत अच्छी है, लेकिन हैंडल खराब है, उसका हैंडल दूसरी वाली कुर्सी के हैंडल से बदल लेते हैं. मैंने अच्छे हैंडल वाली कुर्सी का हैंडल निकाला तथा उसे उस कुर्सी पर लगा दिया, जिसकी ताँत अच्छी थी. दूसरी कुर्सी, जिसकी ताँत खराब थी एवं हैंडल भी मैंने निकाल लिया था, उसको मैंने वहीं छोडने का फैसला लिया. ऐसा सोचकर मैंने उस कुर्सी को मकान के छ्ज्जे पर रख दिया तथा बाकी सामान पैक कराने लगा. समान थोड़ा होने के कारण छोटी गाड़ी में मेरा सामान आसानी से आ गया.

थोड़ी देर में मेरे मकान मालिक वहाँ आए तथा चारों ओर घूम-घूमकर देखने लगे. राजीव जी! आपकी एक कुर्सी छ्ज्जे पर रह गई है. इसे भी उतार लीजिए नहीं तो भूल जाएँगे. - मकान मालिक ने ज़ोर से आवाज़ लगाकर मुझसे कहा.

भैया! वह कुर्सी टूटी हुई है, जिस कारण मैंने जानबूझकर उसे यहाँ छोड़ दिया है. यह कुर्सी मेरे किसी काम की नहीं है. - मैंने उनसे कहा.

हम दोनों की बातें पैकर्स-मूवर्स का एक कर्मचारी बड़े ध्यान से सुन रहा था. हमारी बातें सुनने के पश्चात उसने उस कुर्सी की ओर बड़े ध्यान से देखा तथा बड़ी धीमी आवाज़ में मुझसे कहा -साहब! यदि उस कुर्सी को आप नहीं ले जाना चाहते हैं तो वह कुर्सी मुझे दे दीजिए. मैं अपने घर लेकर चला जाऊँगा. थोड़ी-बहुत मरम्मत कराकर मैं उसका उपयोग करूँगा.

ठीक है. आप उस कुर्सी को उतार कर गाड़ी में रख लो. लेकिन ध्यान रखना उस कुर्सी को आपको लेकर जाना है. ऐसा मत करना कि यहाँ से लेकर चल रहे हो, वहाँ पहुँचकर लेने से मना कर दो. एक बात और सामान उतारते समय गलती से भी यह कुर्सी नीचे मत उतारना, इसे गाड़ी में ही रहने देना. मैंने उस कर्मचारी से कहा.

ठीक है साहब! ऐसा ही करूँगा. - कर्मचारी ने कहा.

सभी सामान गाड़ी में आ जाने के पश्चात मैं अपने मकान मालिक तथा आस-पास के लोगों से मिला तथा उनसे विदा लेकर वहाँ से चला आया. मेरा सामान जिस दिन पहुँचा, वह बुधवार था तथा समय दोपहर के 2:00 बज रहे थे. चारो ओर सन्नाटा था.

मेरे फ्लैट पर सामान पहुँचने के पश्चात मजदूर जल्दी-जल्दी मेरा सामान उतारने लगे. सभी सामान उतर जाने के पश्चात् मेरे आदेशानुसार उस मजदूर ने मेरे टूटी हुई कुर्सी को गाड़ी में ही रहने दिया. सभी सामान मेरे कमरे में रखवाने के पश्चात् मैंने चैन की साँस ली तथा ईश्वर का धन्यवाद किया कि मेरी टूटी कुर्सी पर किसी का ध्यान नहीं गया. मैंने अपने फ्लैट का दरवाजा लगाया तथा सभी सामानों को व्यवस्थित करने लगा. थोड़ी देर में मेरे दरवाजे की घंटी बजी.

मैंने धीरे से अपने फ्लैट का दरवाजा खोला. दरवाजे पर मुझे मेरे फ्लैट का गार्ड सुरेश दिखा, जो किसी को पकड़े हुए था.

साहब! देखिए मैं किसे पकड़ कर लाया हूँ. यह आपकी कुर्सी लेकर भाग रहा था.- सुरेश ने उस मजदूर की ओर इशारा करते हुए कहा, जिसे मैंने अपनी कुर्सी ले जाने की अनुमति दी थी.

मजदूर ने कहा -अरे! गार्ड जी, मैं कुर्सी लेकर नहीं भाग रहा हूँ. साहब ने यह कुर्सी मुझे ले जाने के लिए कहा है.

मजदूर के मुँह से यह सुनते ही सुरेश निराश हो गया. उसे लगा कि उसकी मेहनत बेकार गई. अचानक सुरेश ने कहा-साहब! यह कुर्सी इस मजदूर को न देकर मुझे दे दीजिए. मेरे पास अपार्टमेंट के दरवाजे के सामने रखने के लिए अतिरिक्त कुर्सी नहीं हैं, जिस कारण मुझसे मिलने आने वाले व्यक्ति को मैं बैठा नहीं सकता हूँ. यदि आप यह कुर्सी मुझे दे देते हैं तो मैं थोड़ी-बहुत मरम्मत करके इसे बनवा लूँगा तथा अपार्टमेंट के सीढ़ी के समीप रखूँगा ताकि यदि मुझसे कोई मिलने आता है तो मैं उसे इस कुर्सी पर बैठने के लिए कह सकूँ.

मैंने सुरेश से कहा - ठीक है! तू ही ले ले. लेकिन इतना ध्यान रखना कि किसी से यह मत कहना कि यह कुर्सी मैंने तुझे दी है.

सुरेश ने कहा - ठीक है साहब!

सुरेश ने वह कुर्सी अपने पास रख ली तथा थोड़ी-बहुत मरम्मत करके उसे बैठने योग्य बना लिया. वह अपार्टमेंट के दरवाजे के समीप उसी कुर्सी को लगाकर रखने लगा. सुबह-शाम ऑफिस आते-जाते समय मेरी नज़र उस कुर्सी पर पड़ती थी. मैं थोड़ी देर रुक कर उस कुर्सी को ज़रूर निहारता था. मानो वह कुर्सी मुझे इस बात का एहसास कराती हो कि मेरे संघर्ष के दिनों में यह कुर्सी तथा इसी प्रकार के जरूरत के अन्य सामान को इकट्ठा करने में मैंने कैसे पाई-पाई जोड़ी थी. आज मैं अपने संघर्ष के दिनों को भूलकर बाह्य आडंबर से पूर्ण तमाम सुख-सुविधाओं के पीछे अंधाधुंध दौड़ लगा रहा हूँ, पर आज भी कभी-कभी अनायास ही वह कुर्सी मुझे याद आ ही जाती है. ❑❑❑

- राजीव कुमार
मुख्य प्रबंधक (निरीक्षण एवं लेखा परीक्षा)
अंचल कार्यालय, पटना

दुर्ग क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया. इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रबन्धक डॉ. आर के मोहन्ती एवं उप क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री अरविंद काटकर भी उपस्थित रहे.

बड़ौदा शहर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा शहर में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उप-क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजन प्रसाद एवं श्री सुधाकर ग. येवलेकर भी उपस्थित रहे.

गोधरा क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, गोधरा में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया. इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रबंधक श्री डी. आर. शर्मा एवं उप क्षेत्रीय प्रबंधक - II श्री नरेंद्र पांडेय भी उपस्थित रहे.

बड़ौदा जिला क्षेत्र

बड़ौदा जिला क्षेत्र द्वारा विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया. इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख श्री संजीव आनंद, उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री रवि पाठक एवं श्री अरविन्द सिन्हा भी उपस्थित रहे.

नवसारी क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, नवसारी में विश्व हिन्दी दिवस समारोह मनाया गया. कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रमुख श्री मनोज गुप्ता, उप क्षेत्रीय प्रमुख द्वय कुमार अभिषेक श्रीवास्तव एवं चंद्रकांत चक्रवर्ती उपस्थित रहे.

वलसाड क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, वलसाड में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया. इस अवसर पर उप महाप्रबंधक श्रीमती वृषाली कांबली, उप क्षेत्रीय प्रबंधक - I श्री रतनलाल रजवानियां एवं उप क्षेत्रीय प्रबंधक - II श्री डी.एन.गांधी उपस्थित रहे.

करनाल क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल में विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सत्य प्रकाश, उप क्षेत्रीय प्रबंधक द्वय श्री सरबजीत सिंह एवं श्री अंजनी कुमार सिंगल की उपस्थिति में किया गया.

सिलीगुड़ी क्षेत्र

सिलीगुड़ी क्षेत्र द्वारा क्षेत्रीय प्रमुख श्री फिलीप बुड़ की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री लोपसांग शेर्पा भी उपस्थित रहे.

संबलपुर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, संबलपुर में उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री आर्य प्रकाश दास की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया.

विजयवाड़ा क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा में क्षेत्रीय प्रमुख श्री विनोद बाबू की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया.

जबलपुर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर में उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजीव कुमार की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया.

रायपुर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर में उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सत्यरंजन महापात्रा की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया.

वाराणसी क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय,वाराणसी में सहायक महाप्रबंधक श्री रंजीत कुमार झा की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया.

कोल्हापुर

क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्हापुर में विश्व हिन्दी दिवस धूमधाम से मनाया गया. समारोह में सभी स्टाफ सदस्यों ने सहभागिता की.

चंडीगढ़ क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में क्षेत्रीय प्रमुख सुश्री सम्मिता सचदेव की उपस्थिति में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर सुश्री प्रतिभा कुमारी, विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग), एस. डी. कॉलेज, चंडीगढ़ उपस्थित रहीं.

जूनागढ़ क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, जूनागढ़ में क्षेत्रीय प्रमुख श्री जे.बी. रोहड़ा, उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री एम. निशात एवं श्री शैलेश कुमार की उपस्थिति में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया.

गुवाहाटी क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी में क्षेत्रीय प्रमुख श्री सोनाम टी भूटिया की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया.

गोरखपुर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर में क्षेत्रीय प्रबंधक श्री बसंत सिंह चौधरी की उपस्थिति में विश्व हिन्दी दिवस धूमधाम से मनाया गया.

अजमेर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, अजमेर में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री आर. एस. नैन की अध्यक्षता में किया गया.

पूर्णिया क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, पूर्णिया में क्षेत्रीय प्रमुख श्री जगजीव कुमार जायस की अध्यक्षता में विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया.

भरूच क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच में विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन क्षेत्रीय प्रमुख श्री आर के गोयल की अध्यक्षता में किया गया.

सूरत शहर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत शहर में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री आदित्य कन्नौजिया की अध्यक्षता में किया गया.

आगरा क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रमुख श्री रवि गोयल ने की.

देहरादून क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, देहारादून में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री अक्षय रस्तोगी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की.

'भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की भूमिका' विषय पर अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन

बैंक ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों के स्टाफ सदस्यों के लिए दिनांक 07 फरवरी 2020 को अंचल कार्यालय, जयपुर के सहयोग से जयपुर में 'भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की भूमिका' विषय पर अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन किया. कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री एस एल जैन ने की. उन्होंने कहा कि भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाना सरकार की दूरगामी सोच है और इस लक्ष्य की प्राप्ति में बैंकों की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण है. इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में राजस्थान विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस एस सोमरा उपस्थित रहे. सेमिनार में जयपुर अंचल के महाप्रबंधक एवं राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति के संयोजक श्री एम एस महनोत तथा क्षेत्रीय प्रमुख (जयपुर क्षेत्र) श्री प्रदीप कुमार बाफना, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री रोशन शर्मा, सहायक महाप्रबंधक द्वय सुश्री पारुल मशर, श्री पुनीत कुमार मिश्र तथा विभिन्न बैंकों के प्रतिभागीगण और बैंक के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

कोयंबत्तूर क्षेत्र द्वारा अविनाशिलिंगम विश्वविद्यालय को बड़ौदा राजभाषा शिक्षण अवार्ड

दिनांक 21 फरवरी 2020 को अविनाशिलिंगम विश्वविद्यालय, कोयंबत्तूर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस में कोयंबत्तूर क्षेत्र ने सक्रिय सहभागिता की. इस अवसर पर क्षेत्र के उप महाप्रबंधक श्री सी सेल्वराजू मुख्य अतिथि रहे. राजभाषा हिंदी प्रचार प्रसार हेतु विश्वविद्यालय को बड़ौदा राजभाषा शिक्षण अवार्ड से सम्मनित किया गया.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

बड़ौदा

बैंक नराकास, बड़ौदा की 64वीं छःमाही बैठक 24 जनवरी 2020 को आयोजित की गई. बैठक की अध्यक्षता महाप्रबंधक (परिचालन एवं सेवाएं) श्री के आर कनोजिया ने की. बैठक में उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, मुंबई डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, उपाध्यक्ष एवं महाप्रबंधक (बड़ौदा अंचल) अजय कुमार खोसला, प्रमुख राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री रोशन शर्मा एवं अन्य सदस्य बैंक के कार्यपालकगण भी उपस्थित रहे.

जयपुर

बैंक नराकास, जयपुर की अर्द्धवार्षिक बैठक 30 जनवरी, 2020 को समिति के अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक श्री महेंद्र एस. महनोत की अध्यक्षता में एवं क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक श्री अरुण कुमार सिंह के विशेष मार्गदर्शन में आयोजित की गई. इस बैठक में बैंक के सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री पुनीत कुमार मिश्र भी उपस्थित रहे.

गरियाबंद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गरियाबंद की छःमाही बैठक का आयोजन दिनांक 24 जनवरी 2020 को समिति के अध्यक्ष अग्रणी जिला प्रबंधक श्री प्रशांत शर्मा की अध्यक्षता में किया गया.

टोंक

दिनांक 09 जनवरी 2020 को अग्रणी जिला प्रबन्धक कार्यालय, टोंक की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, टोंक की अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन किया गया. बैठक में भारत सरकार से सहायक निदेशक श्री नरेंद्र सिंह मेहरा विशेष रूप से उपस्थित हुए. इस अवसर पर वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती प्रीति राउत भी उपस्थित रहीं.

आसन और स्वास्थ्य

'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' अर्थात् शरीर ही मानव का सबसे महत्वपूर्ण साधन है. वास्तव में स्वास्थ्य ही प्रथम सुख है. स्वास्थ्य केवल रोगों से निदान पाना नहीं है, यह अर्थ अधूरा है. एक स्वस्थ शरीर का संबध स्वस्थ मन से भी है. असल में एक स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है. इनमें से यदि एक का साथ भी नहीं मिले तो हम पूरी तरह से स्वस्थ जीवन नहीं जी सकते हैं. इसलिए योगशास्त्र में शरीर और मन के परस्पर दृढ संबंध को अधिक महत्व दिया गया है.

हमारी मानसिक स्थिति का सीधा परिणाम शरीर के स्वास्थ्य पर पड़ता है. योगशास्त्र का ऐसा मानना है की शरीर का मन पर असर होने से ज्यादा मानसिक विकार का असर शरीर पर अधिक होता है और इसी वजह से योगशास्त्र में मानसिक व्यायाम को अहम् स्थान दिया गया है. आसन का अभिप्राय शारीरिक व्यायाम है और उसको योग के अभ्यास क्रम में तीसरा स्थान दिया गया है. यम और नियम ये मानसिक व्यायाम हैं. इसलिए उनको प्रथम व द्वितीय स्थान पर रखा गया है.

'अहिंसा सत्यमस्तेयं, ब्रह्मचर्य परिग्रहा यमाहा: शौच संतोष तप: स्वाध्याय्येश्वर प्रणिधानानि नियमा:'.. अर्थात् – अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी नहीं करनी), ब्रम्हचर्य व अपरिग्रह (संग्रह नहीं करना) ये पांच यम यानी व्रत हैं और शौच (शरीर और मन की शुद्धि), संतोष, तप (द्वन्द्व सहन करने की शक्ति), स्वाध्याय एवं ईश्वर शरण ये पांच नियम यानी महाव्रत हैं. आसन से सम्पूर्ण फायदा लेना हो तो आसन के साथ या उसके पहले यम और नियम द्वारा मन को स्थिर करना चाहिए. अर्थात् यम – नियम के सिवा भी आसन हो सकते हैं. किन्तु पूरा फायदा नहीं होता है. आसन अगर नियमित रूप से करते हैं तो उसका फायदा सिर्फ शरीर को ही नहीं बल्कि शरीर के साथ मन स्वस्थ रखने के लिए भी होता है. अतः मधुमेह, बद्धकोष्ट, चित्तभ्रम, दुर्बलता आदि रोग आसन करने से ठीक होते हैं.

इस प्रकार हम देख सकते हैं की आसन से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता मिलती है

आसन से शरीर को निम्नलिखित महत्वपूर्ण फायदे होते हैं :

(1) आसन में मांसपेशियां खींची जाती हैं और संकोचन पाती हैं इसलिए मांसपेशियां सुस्थित व व्यवस्थित रहती हैं.

(2) आसन में नलिका विरहित ग्रंथी संबंधी फायदा होता है.

(3) शरीर पर जमी हुई चरबी कम हो कर शरीर स्वस्थ एवं सुदृढ़ रहता है.

(4) हृदय को ज्यादा तनाव न देते हुए भी शरीर के सभी अंगों और ग्रंथी तक रक्त परिसंचरण होता है.

(5) ज्ञानतंतु प्रसरण पाकर सुव्यवस्थित बनते हैं.

(6) मस्तिष्क की पेशी तक रक्त का परिसंचरण ज्यादा होता है.

(7) श्वसानक्रिया नियमित होती है एवं मानसिक स्थिरता बढ़ती है.

आसन के दो विभाग है 1 – आरोग्यवर्धक और 2 – एकाग्रतावर्धक. शीर्षासन सर्वांगासन, भुजंगासन, धनुरासन, आदि आरोग्यवर्धक आसन है. वहीं, पद्मासन, वज्रासन, स्वस्तिकासन आदि एकाग्रतावर्धक आसन हैं.

आसन के दो उद्देश्य भी होते हैं. कई लोग सिर्फ शारीरिक विकास की दृष्टि से आसन करते हैं तो कई लोग आरोग्य के साथ आध्यात्मिक विकास की दृष्टि से भी आसन करते हैं.

आसन करते वक्त कुछ महत्व की बातें:-

(1) आसन करते समय मन को स्थिर रखना चाहिए.

(2) आसन होने के बाद किसी प्रकार की थकान या बोरियत नहीं आनी चाहिए और मन प्रफुल्लित एवं आनंदमय होना चाहिए.

(3) आसन की शुरुआत हमेशा सीधी व सरल क्रिया से करनी चाहिए.

(4) बीमार पड़ने के बाद जब तक शरीर सामान्य नहीं हो जाता है, तब तक आसन नहीं करना चाहिए.

(5) आसन हमेशा खाली पेट करना चाहिए. ज्यादा आहार लेने के बाद चार घंटे तक आसन नहीं करना चाहिए, हल्के नाश्ते के बाद एक घंटे तक आसन नहीं करना चाहिए. आसन करने के बाद करीब आधे घंटे के बाद हलका नाश्ता कर सकते हैं.

(6) आसन करने वालों को जिव्हा को खुश करने के बजाय शरीर के अनुरूप आहार लेना चाहिए. विशेषत: तले हुए पदार्थ एवं चाय, कॉफी जैसे उत्तेजक पेय नहीं लेने चाहिए अथवा उनकी मात्रा कम करनी चाहिए और दूध, घी, छाछ जैसे सात्विक पदार्थ लेने चाहिए. पानी उत्तम पेय है.

(7) आसन के लिए शुद्ध हवा एवं प्रकाश वाली जगह का उपयोग करना चाहिए. ज़ोर से हवा चलती हुई जगह पर आसन नहीं करना चाहिए.

(8) आसन करने से पहले यदि स्नान करते हैं तो वह ज्यादा हितवाह होता है क्योंकि स्नान से शरीर में रक्त परिसंचरण होने में मदद मिलती है.

(9) आसन के साथ दूसरा मेहनतवाला व्यायाम कर सकते हैं किन्तु दोनों के बीच करीब 20 मिनट का अंतर रखना चाहिए.

(10) यम और नियम का ज्यादा से ज्यादा पालन करना चाहिए. सुबह से ज्यादा शाम को शरीर की मांसपेशियां ज्यादा लचिली होती हैं इसलिए सरलता से मुड़ती हैं इस वजह से आसन शाम को कर सकते हैं तो भी मानसिक स्वास्थ, प्रफुल्लित हवामान और पेट खाली रहने की दृष्टि से सोचें तो शाम से ज्यादा सुबह का वक्त आसन करने के लिए उचित है.

(11) महिलाओं को ऋतुचक्र और गर्भावस्था के दरम्यान आसन नहीं करने चाहिए.

कुछ मुख्य आसन के बारे में अब हम देखेंगे.

(1) **पद्मासन:-** इस आसन से पाचनशक्ति बढ़ती है. भूख व्यवस्थित लगती है और शरीर निरोगी रहता है. इससे संधिवात नहीं होता है. कफ पित्त और वायु का प्रमाण संतुलित रहता है. इस आसन से पांव और जांघ के ज्ञानतंतू शुद्ध और मजबूत बनते हैं.

(2) **शीर्षासन:-** इस आसन को सब आसनों का राजा मानते हैं. ये आसन गुरुत्वाकर्षण नियम के विरुद्ध है. इसकी वजह से हृदय से ज्यादा रक्त खींचा जाता है. इससे स्मरणशक्ति बढ़ती है. ये आसन सर्व रोगहर्ता है. इससे मानसिक शक्ति बढ़ के कुंडलिनी शक्ति जागृत होती है. इससे पेट और आतों के रोग दूर होते हैं. रक्तशुद्धि होती है. आँख, नाक, मस्तिष्क, गला, पेट, यकृत, पित्ताशय, आदि के रोग दूर होते हैं. पाचक रस बढ़कर जठराग्नि प्रदीप्त होता है.

(3) **सर्वांगासन:-** इससे थायरोइड ग्रंथि को अच्छी तरह से पोषण मिलता है और थायरोइड ग्रंथि अच्छी तरह से काम करती है इस वजह से रक्तपरिसंचरण, श्वसनक्रिया, पाचनक्रिया, उत्सर्गक्रिया और नाडीतंत्र अच्छी तरह काम करते हैं. इससे गोनोरिया और किडनी संबन्धित रोग ठीक होते हैं. अपाचन, अजीर्ण, मलवरोध एवं आंतों के रोग ठीक होते हैं.

(4) **मत्स्यासन:–** इस आसन में प्लाविनी प्राणायाम की मदद से पानी में मछली की तरह तैर सकते हैं. सर्वांगासन के बाद तुरंत यह आसन करना चाहिए. सर्वांगासन करने से गर्दन है और वाह के स्नायु खींचे जाते हैं इस आसन से स्नायु की नैसर्गिक मालिश होती है. श्वासनली एवं स्वर पेटी खुली रहने के कारण यह आसन दीर्घ श्वासोंछ्वास करने में सहायक होता है इस वजह से अच्छी मात्रा में शुद्ध प्राणवायु (ऑक्सिजन) मिलता है और अस्थमा ठीक होता है.

(5) **हलासन:–** इस आसन से मज्जातंतु, रीढ़ की हड्डी, रीढ़ और मज्जासंस्था को फायदा होता है. रीढ़ की हड्डी बहुत लचीली एवं स्थितिस्तापक बनती है. इससे चरबी या स्थूलता, बद्धकोष्ट, यकृत आदि के विकार दूर होते हैं. व्यक्ति सक्रिय एवं फुर्तिला बनता है.

(6) **पश्चिमोत्तानासन:–** इस आसान से पेट पर जमी हुई चरबी कम होती है. आंत की आकुंचन प्रसारण क्रिया जल्दी होती है. इस वजह से बद्धकोष्ट, अजीर्ण, मंदाग्न आदि रोग नष्ट होते हैं.

(7) **मयूरासन:–** इस आसान से थोड़े ही वक्त में ज्यादा व्यायाम होता है. पाचनशक्ति बढ़ती है. (जहर भी पचता है) यकृत के रोग ठीक होते हैं. मलावरोध, तथा वायू, पित्त और कफ बढ़ने से होने वाले रोग ठीक होते हैं. मधुमेह की वजह से होनेवाला रक्तस्त्राव बन्द होता है. (महिलाओं को यह आसान नहीं करना चाहिए)

(8) **अर्धमच्छेन्द्रासन:–** इस आसान से भूख बढ़ती है. रीढ़ की हड्डी स्थितिस्थापक बनती है.

(9) **भुजंगासन:–** इस आसान से रीढ़ की हड्डी और पीठ दर्द कम होता है. मलावरोध दूर होता है. महिलाओं के लिए ये आसन बहुत ही उपयुक्त है.

(10) **वज्रासन:–** यह आसन भोजन के बाद आधा घंटा करने से खाना अच्छी तरह पचता है. घुटने, पैर, पैर की उंगलिया आदि का दर्द कम होता है. वायु से होने वाले रोग ठीक होते हैं.

(11) **चक्रासन:–** इस आसन से सम्पूर्ण शरीर पर प्रभुत्व प्राप्त होता है. इससे शरीर स्फूर्तीदायक एवं चपल बनाता है. इससे शरीर के सभी अंगों को फायदा होता है. यह आसन सर्वांगासन का पूरक आसन है. धनुरासन, शलभासन और भुजंगासन से होनेवाले फायदे इस आसन से मिलते हैं.

(12) **शवासन:–** सभी आसन होने के बाद यह आसन करना चाहिए. इसे मृतासन ऐसे भी कहते हैं. आसन और ध्यान का समन्वय इसमें होता है. यह मन और आत्मा दोनों को शांत करता है. इससे आराम मिलता है और मन शांत होता है.

इस तरह इन योगासन की महती आवश्यकता है हमें अपनी अच्छी सेहत के लिए इन्हें अपनाना चाहिए.

❑❑❑

– संजीवनी पंकज शुक्ल
मासंप्र विभाग
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी बैंक के विभिन्न कार्यालयों/ शाखाओं में धूमधाम से अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया. इस अवसर पर बैंक में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां हम अपने पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं:

अंचल कार्यालय, नई दिल्ली

अंचल कार्यालय, कोलकाता

अंचल कार्यालय, राजकोट

अंचल कार्यालय, चंडीगढ़

अंचल और क्षेत्र, एर्णाकुलम

अंचल कार्यालय, हैदराबाद

अंचल कार्यालय, बरेली

अंचल एवं क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

पुणे अंचल एवं शहर क्षेत्र

अंचल कार्यालय, बड़ौदा

अंचल कार्यालय, चेन्नई

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

सरकारी संपर्क विभाग, नई दिल्ली

बड़ौदा एपेक्स अकादमी

दक्षिण क्षेत्र, भोपाल

क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी

क्षेत्रीय कार्यालय, औरंगाबाद

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, नवसारी

क्षेत्रीय कार्यालय, जूनागढ़

क्षेत्रीय कार्यालय, गोधरा

क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट

क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै

क्षेत्रीय कार्यालय, संबलपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी

क्षेत्रीय कार्यालय, जामनगर

क्षेत्रीय कार्यालय, जलगाँव

क्षेत्रीय कार्यालय, नासिक

क्षेत्रीय कार्यालय, बनासकांठा

क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्हापुर

क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

क्षेत्रीय कार्यालय, मेहसाना

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा शहर

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा जिला

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

क्षेत्रीय कार्यालय, फैजाबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम

दिनांक 23 जनवरी 2020 को एर्णाकुलम अंचल में क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की गई. इस कार्यकम का उद्घाटन उप अंचल प्रमुख श्री जियाद रहुमान ने किया.

क्षेत्रीय कार्यालय, खेड़ा

18 फरवरी 2020 को क्षेत्रीय कार्यालय, खेड़ा में क्षेत्रीय प्रमुख श्री महेंन्द्र बी. वाला की अध्यक्षता में (गुजराती) भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री मयुर पी. ईदनानी, जिला अग्रणी प्रबंधक श्री दिव्येश पारेख एवं विशिष्ट अतिथि के रुप में सी. बी. पटेल आर्ट्स महाविद्यालय की गुजराती साहित्य की विभागाध्यक्ष प्रो. कल्पना त्रिवेदी उपस्थित रहीं.

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

क्षेत्रीय कार्यालय,चंडीगढ़ में क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण के तहत पंजाबी भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री देवराज बंसवाल उपस्थित रहे.

क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद

06 जनवरी 2020 को आणंद क्षेत्र में क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम के तृतीय बैच का शुभारंभ किया गया जिसमें 31 स्टाफ सदस्य शामिल रहे. कार्यक्रम में प्रशिक्षक के रूप में सरदार पटेल विश्वविध्यालय के डॉ. मदनमोहन शर्मा एवं डॉ. दर्शना रोहित उपस्थित रहीं. कार्यक्रम की अध्यक्षता उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री एस. पी. शारदा ने की.

क्षेत्रीय कार्यालय, नवसारी

दिनांक 22 अगस्त 2019 से 30 जनवरी 2020 तक क्षेत्रीय कार्यालय, नवसारी द्वारा क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम का समापन 06 फरवरी 2020 को मूल्यांकन परीक्षा के पश्चात किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, जामनगर

06 मार्च 2020 को क्षेत्रीय कार्यालय, जामनगर द्वारा क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया. इस अवसर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक श्री एस. के. राठोड.

बैंकिंग शब्द-मंजूषा

Arboun अरबॉन

'अरबॉन' अर्थात् भविष्य में किसी वस्तु को खरीदने या न खरीदने अथवा बेचने या न बेचने का इस्लामिक रूप; किसी पण्य वस्तु की निर्दिष्ट मात्रा में पूर्वनिर्धारित तारीख को सुपुर्दगी के लिए जमा कराई गई राशि.

Back-end load पश्च प्रभार, अवधिपूर्ण आहरण-प्रभार

जब कोई निवेशक अपने शेयर, म्युच्युअल फंड अथवा वार्षिकी के रूप में किए गए अपने निवेश को बेचने का प्रयास करता है तो उसे ऐसा करने से हतोत्साहित करने के उद्देश्य से बिक्री-प्रभार अथवा कमीशन वसूल किया जाता है. मूलतः इन प्रभारों का उद्देश्य आहरणों या विनिवेश को वापस निकालने की प्रवृत्ति पर रोक लगाना है. इन प्रभारों को अवधिपूर्ण आहरण-प्रभार, आस्थगित प्रभार, आस्थगित विक्रय-प्रभार, आकस्मिक आस्थगित विक्रय-प्रभार अथवा मोचन-शुल्क कहा जाता है. भले ही इनका नाम जो भी हो, ये आस्थगित विक्रय-प्रभार वाली निधियाँ भारित निधियों का ही एक रूप है.

Chain banking शृंखला बैंकिंग

किसी बैंक अथवा संगठन द्वारा बैंकों के समूह की नीतियों और परिचालनों की दिशा तय करना, परंतु उस समूह के विभिन्न बैंक प्रकट रूप में स्वायत्त और एक-दूसरे से स्वतंत्र होते हैं.

Devaluation अवमूल्यन

किसी करेंसी के विनिमय-मूल्य में आधिकारिक कमी. ऐसा सामान्यतः प्रतिकूल व्यापार-शेष को सुधारने और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है.

Ethical banking नैतिक बैंकिंग

नैतिक बैंकिंग का तात्पर्य उन कुछ कंपनी-निकायों के साथ व्यवहार करने से बचने के लिए व्यक्तियों और/ या संस्थाओं द्वारा लिए जानेवाले फैसले/ निर्णय है, जो उनकी राय में अनैतिक क्रियाकलापों से जुड़े हुए है. किसी बैंक के नैतिक बैंक बनने के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी उधार-नीतियों की सार्वजनिक रूप से घोषणा करे, अनुचित प्रभारों से बचकर रहे, अपने निवेश के स्तर की जानकारी दे तथा किसी खास समुदाय की प्रगति का ध्यान रखे. आज प्रत्येक वित्तीय संस्था के लिए यह आम बात हो गई है कि वह अपने ग्राहकों की बचत और रकम के निवेश के लिए नैतिक निवेश का विकल्प प्रदान करे.

Farmer's club किसान-क्लब

हमारे देश में स्वयं सहायता आंदोलन को मुख्य रूप से महिलाओं दवारा चलाए आंदोलन के रूप में देखा जाता है. जबकि यह सर्वमान्य तथ्य है कि समाज में पुरुषों की भूमिका भी अहम होती है, अतएव स्वयं सहायता आंदोलन के तर्ज पर नाबार्ड ने किसान-क्लब आंदोलन की शुरुआत की, जिसमें पुरुष सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है.

Hurdle rate न्यूनतम प्रतिलाभ दर

यह दर एक लक्षित प्रतिफल को प्रदर्शित करती है, अर्थात् कम से कम एक तय प्रतिफल तो अवश्य मिलना चाहिए. इस शब्द का प्रयोग विभिन्न परिस्थितियों में किया जाता है लेकिन यह हमेशा एक लक्ष्य से संबद्ध होता है जिसे किसी भी परिस्थिति में प्राप्त करना जरूरी है. उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को निवेश करने के लिए मिलनेवाला अपेक्षित न्यूनतम प्रतिलाभ.

Mezzanine financing मध्यवर्ती वित्तपोषण

किसी कंपनी का स्वामित्व रखनेवाले अथवा प्रमुख निवेशकों द्वारा जोखिम-पूंजी के वित्तपोषण के बाद दूसरे प्रमुख निवेशकर्ता द्वारा किया जानेवाला वित्तपोषण. इस स्थिति में निवेशक स्वयं ही प्रमुख निवेशक के बाद दूसरी लाइन में आने के लिए तैयार रहता है और अपने निवेश के लिए एक निश्चित प्रतिफल पाने की सहमति रखता है.

Nest egg रक्षित पूंजी

भावी बड़े खर्चों, जैसे कि बच्चों के उच्चतर अध्ययन और सेवानिवृत्ति के बाद के जीवन के लिए अलग सहेजकर रखी गई पूंजी

Procyclicality अनुचक्रीयता

सामान्य अर्थ में यह शब्द वित्तीय प्रणाली और वास्तविक अर्थव्यवस्था के उस संदर्भ के लिए प्रयुक्त होता है जब ये दोनों आपसी संपर्क से मिलकर कारोबार के चक्र को बढ़ाने हेतु जबर्दस्त प्रयास करती हैं और इससे वित्तीय स्थिरता का जोखिम काफी बढ़ जाता है.

Recourse आश्रय

चूक की राशि वसूल करने का कानूनी आधिकार. उदाहरण के लिए कोई बिल अदत्त हो तब आहरणकर्ता से उस वसूलने का अधिकार आश्रय कहलाता है.

Sick unit रुग्ण इकाई

कोई इकाई जब एक वर्ष के लिए नकद हानि उठाती है और यदि वित्त प्रदान करने वाले बैंक की दृष्टि में उस इकाई के चालू तथा आगामी वर्ष में भी नकद हानि उठाने की संभावना है और ऋणों के रूप में विद्यमान उसकी कुल देयताएं उसकी सकल संपत्ति (प्रदत्त पूंजी व मुक्त आरक्षित राशियों) से काफी अधिक हो जाती है तो ऐसी संपत्ति को रुग्ण इकाई माना जाता है.

Yellow sheets दैनिक भाव-पत्रक

कंपनी बांडों की दैनिक दरें दर्शानेवाला पत्रक. दैनिक कारोबार के दौरान डीलरों द्वारा किसी कंपनी-विशेष के लिए आपस में जो दरें कोट की जाती है उनका रोज़नामचा.

(बैंकिंग पारिभाषिक कोश, भारतीय रिजर्व बैंक से साभार)

अपने आप को परखिए

1. केन्द्रीय जल शक्ति मंत्रालय द्वारा स्वच्छ गंगा मिशन के लिए 'नदी प्रबंधन का भविष्य' विषय पर किस नए कार्यक्रम का संचालन प्रारम्भ किया?
   (क) आइडियाथॉन (IDE-thon) (ख) सोल्यूशन (SOLUtion)
   (ग) आइडियाशन (IDE-tion) (घ) सोलाथॉन (SOL-thon)
2. संयुक्त राष्ट्र द्वारा किस मछली प्रजाति के संरक्षण हेतु 2 मई को अंतर्राष्ट्रीय दिवस का आयोजन किया जाता है?
   (क) गप्पी मछली (ख) टूना मछली
   (ग) ब्लू तांग (घ) स्वोर्डफ़िश
3. कौन से राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश की केसर की खेती को भौगोलिक उपदर्शन टैग (Geographical Indication Tag) प्रदान किया गया है?
   (क) हिमाचल प्रदेश (ख) उत्तराखंड
   (ग) कश्मीर (घ) तमिलनाडु
4. जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवांस्ड साइंटिफिक रिसर्च कहाँ स्थित है?
   (क) बेंगलुरु, कर्नाटक (ख) चेन्नई, तमिलनाडु
   (ग) उदयपुर, राजस्थान (घ) नागपुर, महाराष्ट्र
5. भारत के कौन से शहर को देश का प्रथम दोपहिया वाहन भारत स्टेज – तख टाइप एप्रूवल सर्टिफिकेट जारी किया है?
   (क) बेंगलुरु (ख) मुंबई
   (ग) नई दिल्ली (घ) कोलकाता
6. मात्र 13 दिनों में 50 मिलियन डाउनलोड तक पहुँचने वाला विश्व का प्रथम मोबाइल एप्लिकेशन कौनसा है?
   (क) पोकेमॉन गो (ख) आरोग्य सेतु
   (ग) टिक टॉक (घ) स्नैप चेट
7. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग द्वारा संचालित ऑपरेशन ग्रीन्स में किस खाद्य फसल को शामिल किया गया है?
   (क) टमाटर (ख) प्याज़
   (ग) आलू (घ) उपरोक्त सभी
8. 100% सौर ऊर्जा पर चलने वाला भारतवर्ष का पहला केंद्र शासित प्रदेश कौनसा है?
   (क) दमन (ख) दीव
   (ग) पोंडीचेरी (घ) दादरा नगर हवेली
9. भारत के प्रथम चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS) कौन हैं?
   (क) दीपक कपूर (ख) बिपिन रावत
   (ग) वी.के.सिंह (घ) बिक्रम सिंह
10. भारत के किस राज्य में पहला ट्रांसजेंडर विश्वविद्यालय खोला जाएगा?
    (क) उत्तर प्रदेश (ख) मध्य प्रदेश
    (ग) पंजाब (घ) हरयाणा
11. वर्ष 2020 में कितने लोगों को 'पद्म विभूषण'से सम्मानित किया गया है?
    (क) 11 (ख) 5
    (ग) 7 (घ) 16
12. किस प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक को फादर ऑफ इंडियन केमिस्ट्री के नाम से जाना जाता है?
    (क) सत्येन्द्रनाथ बोस (ख) हरगोविन्द खुराना
    (ग) प्रफुल्ल चंद्र राय (घ) महर्षि कणाड
13. 'स्माईलिंग बुद्धा' के नाम से किसे जाना जाता है?
    (क) बोधगया में बुद्ध की मूर्ति
    (ख) भारत के पहले सफल परमाणु बम परीक्षण के लिए कोड नाम
    (ग) भारतीय नौसेना में शामिल एक जहाज
    (घ) विस्थापित बौद्ध भिक्षुओं के लिए तैयार बस्तियां
14. मनुष्य ने सबसे पहले किस धातु का उपयोग किया था?
    (क) सोना (Gold) (ख) चांदी (Silver)
    (ग) तांबा (Copper) (घ) लोहा (Iron)
15. बायोगैस का प्रमुख अवयव क्या है?
    (क) मिथेन (ख) कार्बन डाइऑक्साइड
    (ग) ईथेन (घ) नाइट्रोजन
16. निम्नलिखित में से किस में प्रोटीन का सबसे अधिक स्त्रोत पाया जाता है?
    (क) बादाम (ख) चना
    (ग) मसूर (घ) सोयाबीन
17. सामान्यतः उपयोग होने वाली बिजली के बल्ब में कौन सी गैस भरी जाती है?
    (क) ऑक्सिजन (ख) आर्गन
    (ग) हाइड्रोजन (घ) नाइट्रोजन
18. त्रिपिटक किस धर्म से जुड़ी हुई किताब है?
    (क) हिन्दू (ख) जैन
    (ग) सीख (घ) बौद्ध
19. कंचन गंगा पर्वत शिखर कहाँ स्थित है?
    (क) असम (ख) सिक्किम
    (ग) उत्तराखंड (घ) हिमाचल प्रदेश
20. प्रत्येक साल 'रेड क्रॉस डे' कब मनाया जाता है?
    (क) 1 मई (ख) 5 मई
    (ग) 8 मई (घ) 10 मई

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर: –							
1.	क	6.	ख	11.	ग	16.	घ
2.	ख	7.	घ	12.	ग	17.	ख
3.	ग	8.	ख	13.	ख	18.	घ
4.	क	9.	ख	14.	ग	19.	ख
5.	ग	10.	क	15.	क	20.	ग

पुस्तक समीक्षा

वाइज़ एंड अदरवाइज़ - जीवन को सलाम

पुस्तक का नाम : **''वाइज़ एंड अदरवाइज़''**

प्रकाशक : **ईस्ट वेस्ट बुक्स प्रा.लि. (मद्रास)**

वर्ष : 2002

कीमत : **रू. 250/- मात्र**

मानव जीवन विविधताओं से परिपूर्ण है. यहाँ भांति-भांति के रिश्ते हैं, तरह-तरह के लोग हैं. कहीं प्रेम के प्रतीक राधा-कृष्ण है, तो कहीं झूठे दंभ में अपने ही पिता और बहन को कारावास भेजनेवाला कंस है. कहीं मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं, तो कही रावण. यह केवल धार्मिक ग्रन्थ अथवा इतिहास में नहीं अपितु वर्तमान दौर के मनुष्यों में भी देखा जाता है. ऐसे ही अच्छे और बुरे व्यक्तित्व के लोगों से जुड़ी सच्ची कहानियों का संकलन मैंने विगत दिनों पढ़ा, जिसमे लेखिका ने अपने अनुभव शब्दों के रुप में पुस्तक में उकेरे हैं. इस पुस्तक का नाम :- **''वाइज़ एंड अदरवाइज़ - अ सल्यूट टू लाइफ''** है.

इन्फोसिस फाउंडेशन की चेयरपर्सन श्रीमती सुधा मूर्ति द्वारा लिखित इस पुस्तक का प्रथम प्रकाशन वर्ष 2002 में हुआ था. इस पुस्तक की प्रसिद्धि का आंकलन इसी बात से लगाया जा सकता है कि मूलत: अंग्रेजी में प्रकाशित इस पुस्तक का सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है. छोटी छोटी 51 कहानियों से भरी यह किताब बच्चों सहित हर वर्ग के पाठकों के लिए रुचिकर है.

यह पुस्तक, लेखिका के जीवन के वास्तविक अनुभवों पर आधारित है. पुस्तक के माध्यम से लेखिका ने बहुत ही सहजता से यह सन्देश दिया है कि ज्ञान के लिए शिक्षा और ऊँचे पद की आवश्यकता नहीं होती. कभी-कभी, बहुत ही साधारण से दिखने वाले व्यक्ति जिन्हें जीवन में उचित अवसर भी नहीं मिल पाता, अपनी सादगी और अनुभव से ज्ञानवर्धक और महत्वपूर्ण सीख दे जाते हैं. वहीं दूसरी ओर सभ्य और सफल माने जाने वाले व्यक्ति ऐसे कटु अनुभव दे जाते हैं कि मन व्यथित हो जाता है. ऐसे ही अलग-अलग वास्तविक अनुभवों की शृंखला से तैयार एक शिक्षाप्रद पुस्तक है *'वाइज़ एंड अदरवाइज़'*.

उक्त पुस्तक के अध्ययन के दौरान कई बार साधारण से लगने वाले असाधारण लोगों की सादगी से मन मंत्रमुग्ध हो गया. जैसे कि पुस्तक की पहली कहानी 'ऑनेस्टी कम्स फ्रॉम द हार्ट' का पात्र हनुमंथापा जो एक बेहद ही ईमानदार और होनहार लड़का है. उसे पढ़ाई के लिए लेखिका द्वारा भेजी गयी राशि में से वह केवल अत्यावश्यक खर्च ही करता है तथा हॉस्टल बंद रहने के कारण अनुपयोग की गयी राशि पूरी ईमानदारी से लेखिका को लौटा देता है.

इसी प्रकार इस किताब का तीसरा अध्याय 'इन सहयाद्री हिल्स, ए लेसन इन ह्यूमिलिटी' में सह्याद्री पर्वत की वादियों के घने जंगल के बीच बसे एक अत्यंत छोटे से गांव के प्रमुख, जो उस गांव के सबसे उम्रदराज़ व्यक्ति थे और जीवन में कभी स्कूल नहीं गए थे, लेखिका ने जब उस गाँव के जर्जर हो चुके स्कूल के बच्चों की पढ़ाई के लिए सामान दिया तो मुखिया ने बड़ी ही सादगी से लेखिका को यह सीख दी कि किसी से कुछ लो तो बदले में कुछ देना भी चाहिए. दूसरों से केवल लेना ही मानव धर्म नहीं कहलाता बल्कि बदले में कुछ देना भी पड़ता है फिर चाहे वो सहायता हो या स्नेह.

पुस्तक में स्वार्थ से भरे कुछ रिश्तों की भी दास्ताँ है. ऐसी ही एक कहानी पुस्तक के सातवें अध्याय 'इन इंडिया, द वर्स्ट ऑफ बोथ वर्ल्डस' में एक संपन्न बेटा अपने पिता को एक अनजान व्यक्ति बताकर वृद्धाश्रम में छोड़ जाता है. पिता की मृत्यु के बाद वह बेटा आश्रम पहुँचकर अपने पिता के थैले की मांग करता है. थैले की जाँच में यह पता चलता है कि पिता के पास 3 जोड़ी पुराने कपड़ों के साथ एक बैंक का पासबुक था जिसमें जमा लाखों रूपए का उत्तराधिकारी उस बेसहारा पिता ने अपने इस स्वार्थी बेटे को बनाया था.

ऐसी ही मार्मिक एवं मन को प्रफ्फुलित करने वाली कहानियों से ओतप्रोत यह पुस्तक मानव जीवन को एक नयी दिशा प्रदान करती है. पुस्तक की लेखिका श्रीमती सुधा मूर्ति जो पेशे से इंजीनियर हैं, उनका समाज सेवा में हमेशा से महत्वपूर्ण योगदान रहा है. स्वभाव से सरल और हंसमुख श्रीमती मूर्ति विशेषकर देवदासियों के उत्थान के लिए कार्य करती हैं और उनकी लिखी तमाम किताबें उनके द्वारा की गयी समाज सेवा के दौरान हुए वास्तविक अनुभवों पर आधारित होती हैं.

हालाँकि मैंने इस किताब का अंग्रेजी संस्करण पढ़ा है किन्तु यह सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है. मेरे हृदय पर इस किताब ने एक विशेष छवि बनायी है और मुझे उम्मीद है कि यह दूसरे पाठकों को भी उतना ही भाव विभोर करेगी. ❑❑❑

- पूजा शर्मा
प्रबन्धक, परिचालन एवं सेवाएँ
क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग

चित्र बोलता है

1

वीरान पड़ी इस इमारत को इंतज़ार है,
फिर से खिलखिलाने का अपने जीर्णोद्धार का.
जो संवारे उसे और ला सके वापिस खोया हुआ यौवन,
इतिहास में दबने से पहले दे नया जीवन.

– पायल गोयल
झज्जर शाखा

2

सूना आंगन वीरान घर सवाल करे है घरवालों से,
क्यों मुझसे अपना पुश्तैनी रिश्ता तोड़ गये हो.
गये हो शहर की भूलभुलैया में आशियाँ बनाने,
मगर अपने घर को तो घर पर ही छोड़ गये हो.

– मंगल अरविंद चव्हाण
वाई शाखा, क्षेत्र कोल्हापुर

3

कभी रोशनी से जगमगाता था जहां बचपन का गलियारा,
हंसी ठहाकों से गूंज उठता था जहां मोहल्ला सारा.
देख रहा आज.. वीरान खड़ा मैं, कहाँ है वो मंज़र न्यारा,
लौट आ फिर सँजोने.. सपनों का वहीं घर प्यारा –प्यारा.

– प्रतीका गार्गव साकल्ले
राजभाषा अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग

4

दरों दीवार पे अब कोई दस्तक नहीं देता,
तरसती हैं आँखें कोई मकसद नहीं देता.
कभी शादाब था मेरा आंगन भी ऐ दोस्त,
इस वीरान से खँडहर को अब कोई घर नहीं कहता.

– गोपीनाथ पंडा
वरिष्ठ प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, संबलपुर

5

यादों में आज भी धुंधला, आशियाना मुझे पुकारता सा.
दो खिड़कियां मुझको ढूंढ़ती, दरवाज़ा मुझे निहारता सा.
कभी तो जाऊंगा वापस उस गली में मैं बेफिक्र,
बाहों में लिए अपनी दुनिया, घर वही फिर से सवारता सा.

– निरंजन प्रसाद मेहरा
पीपालिया शाखा, राजकोट क्षेत्रीय कार्यालय

6

जहाँ तूने पूरी जिंदगी का स्कैच बना लिया था.
जहाँ तूने अपनी छाप छोड़ने का ख्वाब देखा था.
जहाँ तेरे अपने रहा करते थे.
हाँ मैं वही घर हूँ, जो आज भी तेरे इंतज़ार में है.

– उमेश कुशवाहा
प्रबन्धक, तीरथगढ़ शाखा, दुर्ग क्षेत्र

7

ईंट-ईंट जोड़कर बना कभी प्यार से मकान,
वक़्त के थपेड़ों से हो गया वीरान,
अपार्टमेंट वाला फ्लॅट अब घर हो गया है,
वो हवेली, वो अहाता अब खण्डहर हो गया है.

– सौरभ कोठारी
आरबीडीएम, क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर

8

कभी जिस घर की मुंडेर पर चाहती थी चिड़िया
वह आज सुनसान क्यों है,
बसती थी जिस घर में खुशियां
वह आज वीरान क्यों है

– सुधांशु जायसवाल
सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, क्षेत्रीय कार्यालय,रायपुर

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 के गिफ्ट कार्ड / राशि दी जा रही है.

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत अक्तूबर-दिसंबर, 2019 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रयाएं/ रचनाएं प्राप्त हुई हैं. पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें. श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/-) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे. पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई-मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 30 जून 2020 तक भेज सकते हैं.

प्रमुख गतिविधियां

राजभाषा अधिकारियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं समीक्षा बैठक

दिनांक 6 से 7 जनवरी, 2020 को एसपीबीटीसी, मुंबई में राजभाषा अधिकारियों के लिए सामान्य बैंकिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा 8 जनवरी, 2020 को अंचल के राजभाषा अधिकारियों की अर्धवार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. समीक्षा बैठक में बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री शांति लाल जैन उपस्थित रहे. इस अवसर पर प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री रोशन शर्मा, शिक्षण प्रमुख श्री वी सी जैन, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वय सुश्री पारूल मशर और श्री पुनीत कुमार मिश्र भी उपस्थित रहे.

पुरी में राजभाषा प्रदर्शनी का आयोजन

दिनांक 19 फरवरी 2020 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति के द्वारा पुरी शाखा का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया. इस अवसर पर बैंक द्वारा एक राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई, माननीय सांसदों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया.

जयुपर में अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन

दिनांक 07 फरवरी 2020 को बैंक ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों के स्टाफ सदस्यों के लिए जयपुर में अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन किया. कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री एस एल जैन ने की. इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में राजस्थान विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस एस सोमरा उपस्थित रहे. सेमिनार में जयपुर अंचल के महाप्रबंधक श्री एम एस महनोत, उप अंचल प्रमुख श्री योगेश अग्रवाल तथा क्षेत्रीय प्रमुख (जयपुर क्षेत्र) श्री प्रदीप कुमार बाफना, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री रोशन शर्मा, सहायक महाप्रबंधक द्वय सुश्री पारुल मशर तथा श्री पुनीत कुमार मिश्र भी उपस्थित रहे.

मां

मुझ से मिल कर, गले लगाकर, रो देती है,
सुख - चैन भी अपना, बिना कहे कुछ, खो देती है,
कोई फ़र्क़ नहीं लगता, लगती रब जैसी है,
माँ तो माँ है, कड़ी धूप में छाँव, बस ऐसी ही है.

ना भूख सताती है उसको, ना प्यास सताती है,
पूरे दिन की कड़ी मेहनत भी, ना कभी थकाती है,
जब से देखा, बदली नहीं, बस वैसी है,
माँ तो माँ है, कड़ी धूप में छाँव, बस ऐसी ही है.

किस मिट्टी की वो मूरत है, रब से भी सुंदर सूरत है,
दिल मोम सा कोमल है उसका, ममता से भरा सीना उसका,
रो देती है, कभी पूछ के देखो, कैसी है?
माँ तो माँ है, कड़ी धूप में छाँव, बस ऐसी ही है.

कभी चाह कर भी, हम जुदा ना हों इक दूजे से,
ख़फ़ा न हों, उस ख़ुदा की सबसे अहम दुआ के जैसी ही है,
माँ तो माँ है, कड़ी धूप में छाँव, बस ऐसी ही है.

मुझे नहीं चाहिए राज कोई, मुझे नहीं चाहिए ताज कोई,
मुझे शोहरत की भी भूख नहीं, मुझे नहीं चाहिए नाज़ कोई,
मेरी जगह तेरे पैरों में, नहीं कम, स्वर्ग के जैसी ही है,
माँ तो माँ है, कड़ी धूप में छाँव, बस ऐसी ही है.

राकेश भाटिया
सेवानिवृत्त महाप्रबंधक